RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 1 अंक 10 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

liverajsamand.com

हिन्दी मासिक पत्रिका

जून 2018

पेज संख्या : 36 राजसमंद

वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः

वैदिक ज्ञान की बदौलत ही भारत फिर बनेगा विश्वगुरु

सनातन वैदिक शिक्षण संस्थान, कसार

Website : www.sanatanshiksha.org

चारभुजा, जिला राजसमंद 313333 मो. 97999 01847, 94148 33509, 94144-73275

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

खुशखबरी खुशखबरी खुशखबरी खुशखबरी
आपके शहर कांकरोली (राजसमन्द) में महिला रोग प्रसूति एवं नि:स्संतानता विशेषज्ञा की सेवाएँ उपलब्ध।
बनारस युनिवर्सिटि से विशेषज्ञता अर्जित लेडी डॉक्टर की सेवाएँ, आधुनिक उपकरणों के साथ।
सोनोग्राफी उपलब्ध
स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग
डा. श्रीमती आकाँक्षा श्रीवास्तव
M.S.(OBS/GYN) BHU.
स्त्री रोग, प्रसूति एवं निस्संतानता विशेषज्ञा
रजि. 16779(RMC)
M: 91 63766 99424
स्त्रियों के समस्त रोगों का उपचार। नसबन्दी सुविधा। प्रसूति सुविधा
मासिक धर्म सम्बन्धित रोगों का उपचार। सोनोग्राफी सुविधा। 3D-4D कलर सोनोग्राफी। एम.टी.पी. (गर्भपात) एवं नसबंदी का सरकारी मान्यता प्राप्त केन्द्र
नि:संतान दम्पतियों हेतु। दूरबीन से बच्चेदानी और ट्यूब की जांच व निदान
बच्चेदानी निकालने का ऑपरेशन (TAH,VH,NDVH,LAVH)
एम्बुलेन्स सुविधा। हाई रिस्क गर्भावस्था (जोखिम भरी) का उपचार।
I.U.I द्वारा कृत्रिम गर्भाधान। नि:संतान दम्पमियों का उपचार। बार बार गर्भपात होने का उपचार। असामान्य गर्भ (ECTOPIC PREGANCY)
एक बार सेवाका अवसर अवश्य प्रदान करें तथा संतुष्ट होने पर अन्य को भी बतावें।
24 घंटे आपातकालीन सेवाएं उपलब्ध
श्री राधिका हॉस्पीटल
श्री कृष्णा नगर, भीलवाड़ा रोड, कांकरोली राजसमन्द
M: 9414171606, 7838923466
Nested Designer 7340013988, 8963014590

GAYATRI PUBLIC SENIOR SECONDARY SCHOOL, DHOINDA
(English & Hindi Medium)
ADMISSION OPEN UKG to XII
SCIENCE
Physics
Chemistry
Biology
Mathematics
COMMERCE
Accounts
Business Studies
Economics
Mathematics
ARTS
English Lit.
Hindi Lit.
Sanskrit Lit.
Geography
Economics
Drawing
Salient Features
One of The Best Well Disciplined School in District
Educational Environment
Sports & Cultural Activities
Bank & Industry Visit for Commerce Student
Science Visit to Science City Ahmedabad
Educational Tour (Jaisalmer)
E-Learning
Well Furnished & Ventilated Class Room, Labs & Library
Excellent Result in Board Classes
Proficient Faculty & Staff
Scholarship for Meritorious Students
Digital Smart Class Concept
Pure Aqua Water
24 Hours Electricity Backup
Spiritual Prayer
Conveyance Facility by Luxurious Buses
Hurry Up ! Limited Seats....
Contact :
Principal 02952-221818
Hitesh Paliwal 9784055000
Girish Paliwal 02952-220818
Harivallabh Paliwal 9314421818
ADMISSION FORMS ARE AVAILABLE IN OFFICE BETWEEN 8.30AM TO 1.30 PM
Tel. : 02952-220818, 221818 | E-mail : gpsdhoinda@gmail.com
25% RTE Admission

सम्पादकीय

वैदिक ज्ञान ही सर्वश्रेष्ठ

'सर्वे भवन्तु सुखिन:' की भावना ही सनातन वैदिक धर्म के मूल में बसती है। वर्तमान में विश्व में प्रचलित अन्य कथाकथित धर्म सम्पूर्ण विश्व के कल्याण को छोड़कर सिर्फ स्वकल्याण की बात करते हैं। वेदों की रचना परमात्मा द्वारा स्वयं की गई है। विश्व के कई वैज्ञानिक वेदों पर खोज कर रहे हैं और अब यह सिद्ध भी हो चुका है कि सनातन वैदिक हिन्दू धर्म ही सबसे प्राचीन एवं वैज्ञानिक कसौटी पर खरा उतरता है। सिन्धु घाटी सभ्यता में मिली पशुपतिनाथ की मूर्ति, जर्मनी में 1939 में मिली नरसिंह की मूर्ति इस बात के ठोस प्रमाण है। वैदिक प्राणी मात्र के प्रति अहिंसा का भाव सिखाती है। यहीं कारण था कि विदेशी आक्रमणकारी हमारी प्रेम, सत्य, अहिंसा और शांति से जीवन यापन करने वाली संस्कृति को नष्ट करने में सफल हुए। वर्तमान में लार्ड मैकाले की अंग्रेजी शिक्षा के प्रति हमारे लगाव से वैदिक ज्ञान लुप्त प्राय हो गया है। हमें जरूरत है हमारे गौरवशाली भारत की प्राचीन वैदिक संस्कृति को पुनर्जिवित करने की। इस दिशा में सनातन वैदिक शिक्षण संस्थान कसार द्वारा किया जा रहा कार्य प्रसंशनीय एवं अनुकरणीय है।

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

website : liverajsamand.com

सम्पादक व प्रकाशक	ललिता राठौड़
निदेशक व उप सम्पादक	विजय शर्मा
संवाददाता	नरपतसिंह राठौड़
विज्ञापन प्रबंधक	जितेन्द्र शर्मा
ग्राफिक डिजाइन	महेन्द्रसिंह मोजावत
फोटोग्राफी	भरत पालीवाल (श्रीराम स्टूडियो)
वितरण सहयोगी	नारायण पालीवाल

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798

Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

संपादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स हस्तिनापुर, कांकरोली, जिला राजसमंद राजस्थान से मुद्रित।

नोट : पुस्तक में प्रकाशित हर सामग्री में यथासंभव सावधानी रखी। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद्। किसी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

इस अंक में खास...

1. **कवर स्टोरी 1 :** वैदिक ज्ञान की बदौलत भारत फिर बनेगा विश्वगुरु — पेज 3
2. **कवर स्टोरी 2 :** मैकाले ने बदली हमारी शिक्षा पद्धति — पेज – 9
3. **कवर स्टोरी 3 :** वैदिक ज्ञान ने दिलाई कसार को पहचान — पेज –11
4. **रोचक तथ्य :** बोलिया और उनकी मिठास — पेज– 14
5. **कानून अधिकार :** ये है नारी सुरक्षा के कानून — पेज – 12
6. **नारी** — पेज – 15
7. **तीखी मिर्ची :** कम्पीटीशन — पेज – 16
8. **कविता:** 1. हां मैं जलचक्की हूं 2. दारूड़ी — पेज – 17
9. **कानून कायदे :** परिवार कल्याण समितियों की सार्थकता — पेज – 20
10. **माटी का लाल :** ठाुकर ईश्वरदान आशिया — पेज – 21
11. **महाराणा प्रताप जयंती विशेष :** जानिये रोचक बातें — पेज – 27
12. **मेवाड़ी चौपाल :** आपणा राचड़ा आपणो काम — पेज –29
13. **वैज्ञानिक तर्क :** वैदिक ज्ञान की वैज्ञानिक सत्यता — पेज –31

आवश्यकता

मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए

पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की

जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 94142-39648

हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधी जहां से आप जयवर्द्धन मासिक पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं एवं वार्षिक बुकिंग कर सकते हैं।

भीम - हीरालाल भाट मो 99296396015
देवगढ़ - कमल शेख, 94147-86464
रेलमगरा - रोशनलाल टुकलिया मो. 9414927728
आमेट - मॉडर्न स्टेशनर्स, लक्ष्मी बाजार, आमेट
कुंभलगढ़ - देवीसिंह मो. 8003124089
गोमती चौराहा, चारभुजा- भीमराज कोठारी मो. 9610973283
बिनोल - हितेश दवे मो. 7023480406
कुंवारिया - विनय दाधीच मो. 7665005378
नाथद्वारा - कीर्ति स्टेशनर्स, नई सड़क
गजपुर - प्रभुदास वैष्णव मो. 7568485624
मोही - बाबूलाल कीर, मो. 98292-41423

वैदिक ज्ञान की बदौलत ही भारत फिर बनेगा विश्वगुरु

सम्पूर्ण मानव जाति का पथ प्रदर्शक रहा है ब्राह्मण

ब्राह्मण का शब्द दो शब्दों से बना है। ब्रह्म + रमण। इसके दो अर्थ होते हैं– ब्रह्मा देश अर्थात वर्तमान वर्मा देशवासी, द्वितीय ब्रह्म में रमण करने वाला। यदि ऋग्वेद के अनुसार ब्रह्म अर्थात ईश्वर को रमण करने वाला ब्राह्मण होता है। स्कन्द पुराण में षोडशोपचार पूजन के अंतर्गत अष्टम उपचार में ब्रह्मा द्वारा नारद को द्विज की उत्पत्ति बताई गई है।

जन्मना जायते शूद्र: संस्कारात् द्विज उच्यते।

शापानुग्रह सामर्थ्यं तथा क्रोध: प्रसन्नता।।

अर्थात् – ब्राह्मण, आचार्य, विप्र, द्विज, द्विजोत्तम, यह वर्ण व्यवस्था का वर्ण है। ऐतिहासिक रूप हिन्दू वर्ण व्यवस्था में चार वर्ण होते हैं। ब्राह्मण (ज्ञान और आध्यात्मिकता के लिए उत्तरदायी), क्षत्रिय (धर्म रक्षक), वैश्य (व्यापारी) तथा शूद्र (सेवक, श्रमिक समाज)।

यस्क मुनि की निरुक्त के अनुसार – 'ब्रह्म जानाति ब्राह्मण:' ब्राह्मण वह है, जो ब्रह्म (अंतिम सत्य, ईश्वर या परम ज्ञान) को जानता है। अत: ब्राह्मण का अर्थ है, ईश्वर का ज्ञाता।

ब्राह्मण समाज का इतिहास बहुत प्राचीन भारत के वैदिक धर्म से आरंभ होता है। भारत का आधार ही ब्राह्मणों से शुरू होता है। ब्राह्मण नरम व्यवहार के होते हैं। ब्राह्मण व्यवहार का मुख्य स्त्रोत वेद हैं। ब्राह्मण समय के अनुसार अपने आप को बदलने में सक्षम होते हैं। ब्राह्मणों का भारत की आज़ादी में भी बहुत योगदान रहा है, जो इतिहास में गढा गया है। ब्राह्मणों के सभी सम्प्रदाय वेदों से प्रेरणा लेते हैं। पारंपरिक तौर पर यह विश्वास है कि वेद अपौरुषेय (किसी मानव देवता ने नहीं लिखे) व अनादि हैं, बल्कि अनादि सत्य का प्राकट्य है, जिनकी वैधता शाश्वत है। वेदों को श्रुति माना जाता है। श्रवण हेतु जो मौखिक परंपरा का द्योतक है।

वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः

न विशेषोअस्ति वर्णानां सर्व ब्राह्ममिदं जगत।

ब्रह्मणा पूर्व सृष्टं हि कर्मभि वर्णता गतम्।।

महाभारत में भारद्वाजजी के प्रश्न के उत्तर में भृगुजी ने कहा है कि सृष्टि के प्रारम्भ में वर्ण भिन्न भिन्न नहीं थे। ब्रह्मा से उत्पन्न होने के कारण सभी का नाम ब्राह्मण था। बाद में कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था विभाजित हो गई।

भगवान श्रीकृष्ण ने भी गीता में कहा है कि –

चातुर्वर्ण्य मया सृष्टं गुण कर्म विभागश:

अर्थात् – गुण व कर्म के आधार पर ही मेरे द्वारा चारों वर्ण बनाए गए हैं।

ब्राह्मण हर प्रकृति के जीव जन्तु का सहयोगी रहा है। ब्राह्मण किसी जाति का नाम नहीं, वरन आध्यात्मिक उन्नति से ब्रह्मज्ञान के बाद प्राप्त अवस्था का नाम है। वैदिक काल से ही सम्पूर्ण मानव जाति अपनी मानसिक योग्यता के आधार पर वेदों के अध्ययन का पात्र रहा है। इतिहास गवाह है कि निम्न कुल के जन्म के बावजूद ब्रह्मज्ञान के आधार पर कई ब्राह्मण बने हैं। पूर्व में कर्म के आधार पर ही वर्ण व्यवस्था थी, मगर बाद में इसे जन्म के आधार पर मान लिया गया।

वैदिक काल से ही सम्पूर्ण मानव जाति को अपने ज्ञान के बल पर समय समय पर मार्गदर्शन देने का कार्य ब्राह्मण का रहा है। बड़े- बड़े क्षत्रप भी जब पथ भ्रष्ट हो जाते, तब उन्हें श्रेष्ठ मार्ग ब्राह्मणों ने दिखाया है। ब्राह्मण को प्रत्येक युग में पद प्रतिष्ठा का मोह नहीं रहा एवं जन कल्याण के भाव के साथ वैभव से दूर अपने गुरूकुल में बहुत कम सुविधाओं के साथ सात्विक जीवन यापन किया है। विदेशी आक्रांताओं ने परम वैभवशाली भारत की नींव में बसने वाले वैदिक ज्ञान के संवाहक ब्राह्मणों पर तीव्र आक्रमण किए। क्योंकि भारतीय संस्कृति के मूल में हमारी गुरूकुल परम्परा थी, जो सभी मनुष्य जाति को एक सूत्र में बांधती थी। उन्होंने हमारे मंदिर एवं वैदिक शिक्षा प्रणाली को तहस नहस करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। वैदिक ज्ञान के लिए नालन्दा एवं तक्षशिला विश्वविद्यालय प्रसिद्ध थे।

कहते हैं कि जब तक्षशिला विश्वविद्यालय को जलाया गया, तो उसमें इतने अमूल्य ग्रंथ थे कि कई महीनों तक उसकी आग नहीं बुझी। विद्वान ब्राह्मण मार दिए गए थे। तब से ब्राह्मण असहाय हो गए और भारतवर्ष का वैदिक ज्ञान लुप्त प्राय: होता गया।

कसार में जगी वैदिक ज्ञान की अलख

राजस्थान के प्रसिद्ध मेदपाट (मेवाड़) क्षेत्र में अरावली की सुरम्य पर्वतमाला क्षेत्र में राजसमंद जिले के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल श्री चारभुजाजी एवं रूपनारायण तीर्थ स्थल के मुख्य मार्ग से हटकर छोटा सा गांव कसार। राणा कुम्भा के समय में बसा ग्राम जिसमें शुक्ल यजुर्वेदीय सहस्त्र औदिच्य ब्राह्मणों का निवास हैं, जिनका शुरू से ही वैदिक शिक्षा, कर्मकाण्ड एवं ज्योतिष के प्रति निष्ठा एवं पठन- पाठन का उद्देश्य रहा हैं। सन् 1946 तक पं. रेवाशंकरजी शर्मा ने क्षेत्र के ब्राह्मण बालकों को अध्यापन करवाया। तत्पश्चात 'वयं राष्ट्रे जागृयाम् पुरोहिता:' ध्येय वाक्य की सार्थकता सिद्ध करने के लिए 21 मई 2001 को पं. श्री कन्हैयालाल जी द्विवेदी के सान्निध्य में उनके अनुज पुत्र पं. श्री उमेश द्विवेदी के नेतृत्व में 45 बालकों को वेदाध्ययन एवं कर्मकाण्ड की शिक्षा देकर सनातन वैदिक शिक्षण संस्थान कसार की नींव रखी गई। वर्ष 2001 से अनवरत गति से संस्थान ने साढ़े पांच हजार बालकों को वैदिक ज्ञान देकर अपने आत्म गौरव से अवगत कराया है।

जहां एक तरफ झुलसाती गर्मी में बच्चे घर पर टीवी और मोबाइल पर खेल रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ अरावली की तलहटी में बसे छोटे से गांव कसार में नन्हें बालक सुबह 5 बजे उठ कर वैदिक ज्ञान के साथ स्वावलम्बन का पाठ पढ़ रहे हैं। सुबह छह बजे पहले नित्यकर्म से निवृत होकर संध्यावंदन के लिए तैयार हो जाते हैं। फिर आठ बजे योग प्राणायाम, देवता नमस्कार, भद्र सुक्त का पाठ कराया जाता है तथा कुछ देर विश्राम के बाद साढ़े आठ बजे बटुकों को अल्पाहार दिया जाता है। उसके बाद 9 बजे से नियमित कक्षाएं शुरू होती है, जिसमें देवता नमस्कार व रूद्राष्ठाध्याय का पाठ पढ़ाया जाता है। दोपहर बारह बजे भोजन व एक से ढाई बजे तक विश्राम करने के बाद शाम पांच बजे तक दुर्गासप्तसती पाठ, पंचांग व ज्योतिष शास्त्र का अध्यापन कराया जाता है। सायं 5 से 7 बजे तक खेलकूद के माध्यम से शारीरिक विकास की शिक्षा दी जाती है। 7 बजे भोजन के बाद साढ़े 8 बजे से साढ़े 9 बजे तक दिनभर में जो भी पढ़ा और सीखा, उसकी परीक्षा ली जाती है। फिर रात्रि विश्राम करते हैं।

संस्थान के उद्देश्य

1. वैदिक शिक्षण के माध्यम से वेदों तथा सनातन संस्कृति का महत्व बताना।
2. वेदांगों (शिक्षा, कल्प, निरूक्त, छन्द, व्याकरण, ज्योतिष) अध्ययन करवाकर इनका प्रचार प्रसार करना।
3. छात्रों को स्वावलम्बी बनाना।
4. वैदिक शिक्षा का तर्क संगत वैज्ञानिक महत्व बताना।
5. पाश्चात्य संस्कृति के दुष्प्रभावों से निवृत कर सनातन संस्कृति की ओर छात्रों को प्रवृत्त करना।
6. बच्चों का सर्वागिंण (शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक) विकास करना।
7. राष्ट्र प्रेम की भावना छात्रों में जाग्रत करना।
8. बच्चों को प्रशिक्षित कर रोजगार प्रदान करना।
9. आर्थिक रूप से पिछड़े छात्रों को विशेष सहयोग प्रदान करना।
10. बच्चों को ब्रह्मत्व का ज्ञान कराकर स्वाभिमानी बनाना।
11. प्रशिक्षित अध्यापकों के द्वारा अध्यापन कार्य करवाना
12. प्रोजेक्टर एवं कम्प्यूटर के माध्यम से शिक्षण करवाना।
13. ध्यान एवं योग प्रशिक्षण देना।
14. सांस्कृतिक क्रिया कलापों से शिक्षण को रूचिकर बनाना।

संस्थान की भावी योजनाए

1. वैदिक भवन निर्माण।
2. राज्य एवं केन्द्र सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त वेद विद्यालय का निर्माण।
3. वर्षभर आवासीय वेद विद्यालय का निर्माण।
4. विद्यार्थियों के भोजन, वस्त्र, आवास, पुस्तकों की निशुल्क व्यवस्था।
5. व्याकरण वेद ज्योतिष के शिक्षकों की नियुक्तियां।
6. वैदिक शिक्षण के अलावा आरबीएससी एवं सीबीएससी विद्यालय का संचालन।
7. नियमित छात्रों के अलावा अन्य ब्राह्मण बालकों के लिए वर्ष में दो बार संस्कार शिविरों का आयोजन।
8. वर्ष एक बार वैदिक सम्मेलन, वैदिक ज्ञान यज्ञ का आयोजन।
9. वर्षभर शैक्षणिक- सहशैक्षणिक गतिविधियां।
10. सृजनात्मक कौशल विकसित करने हेतु प्रोजेक्ट एवं कम्प्यूटर से शिक्षण।

संस्कार शिविर पाठ्यक्रम

1. यज्ञोपवित धारण निधि।
2. संध्या वन्दन।
3. वेदाध्ययन (रूद्राष्टाध्यायी, सूक्त वाचन, पौराणिक मंत्रोच्चार)
4. प्रारम्भिक ज्योतिष एवं व्याकरण ज्ञान।
5. दुर्गा सप्तशती, षोडंशोपचार पूजन, हवनादिक कर्म।
6. सोलह संस्कारों के विषयों की जानकारी।
7. श्रद्धादि कर्म की आवश्यकता एवं विधि।
8. यज्ञ एवं कर्मकाण्ड विषयों की जानकारी।
9. मण्डल रचना विधि।
10. आयुर्वेद एवं वास्तुशास्त्र का ज्ञान।
11. स्वाध्याय एवं अन्य विषयों की जानकारी।
12. ध्यान एवं योगाभ्यास।
13. सहशैक्षणिक क्रियाकलाप।
14. सांस्कृतिक गतिविधियां।
15. वैदिक अनुसन्धान।

कुंभलगढ़ की नींव से रिश्ता है कसार का

अरावली की पर्वत शृंखलाओं के बीच बसे कसार गांव का विहंगम दृश्य।

विजय शर्मा @ राजसमंद
liverajsamand.com

यह बात सन् 1453 की है, जब कुंभलगढ़ दुर्ग की नींव रखी जा रही थी। कई मजदूर- कारीगर दिन में काम करते और रातभर में नींव पुन: ढह जाती। जब यह सिलसिला नहीं रूका, तो महाराणा कुंभा ने सिरोही जिले के गोल गाँव के तत्कालीन तीन विद्वान ब्राह्मणों को वैदिक अनुष्ठान के लिए आमंत्रित किया। ब्राह्मणों ने नींव की पूर्ण चुनाई तक कई दिनों तक वैदिक यज्ञ किया। निर्विघ्न कार्य संपादन उपरांत तीनों ब्राह्मणों को तीन गांव कसार, कोलर एवं काणां नाम के दक्षिणा में दिए।

कसार के अलावा कोलर व काणां गांव पाली जिले में स्थित है। कहते हैं कि जब कसार गांव ब्राह्मण को दिया जा रहा था, तब 24 घंटे तक घोड़े को आस पास के परिक्षेत्र में दौड़ाया गया और घोड़ा जितने क्षेत्रफल में दौड़ पाया, उतना क्षेत्रफल ब्राह्मण को कर मुक्त कर ब्राह्मण को सुपूर्द किया। इससे पहले महाराणा कुंभा द्वारा कसार में रहने वाले कुम्हार जाति के लोगों को अन्यत्र बसाया गया। तब से ही कसार गांव में वैदिक ज्ञान की मशाल अनवरत गति से जल रही है और अपने आस पास के क्षेत्र को भी रोशन कर रही है।

मैकाले ने बदली हमारी शिक्षा पद्धति

2.2.1835

"I have travelled across the length and breadth of India and I have not seen one person who is a beggar, who is a thief such wealth I have seen in this country, such high moral values, people of such caliber, that I do not think we would ever conquer this country, unless we break the very backbone of this nation, which is her spiritual and cultural heritage and therefore, I propose that we replace her old and **ancient education system,** her culture, for if the Indians think that all that is foreign and English is good and greater than their own, they will lose their selfesteem, their native culture and they will become what we want them, a truly dominated nation".

Lord Macaulay's Address to the British Parliament on 2nd Feb 1835

"मैं भारत में काफी घुमा हूँ। दाएँ- बाएँ, इधर उधर मैंने यह देश छान मारा और मुझे एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं दिखाई दिया, जो भिखारी हो, जो चोर हो। इस देश में मैंने इतनी धन दौलत देखी है, इतने ऊँचे चारित्रिक आदर्श और इतने गुणवान मनुष्य देखे हैं की मैं नहीं समझता की हम कभी भी इस देश को जीत पाएँगे। जब तक इसकी रीढ़ की हड्डी को नहीं तोड़ देते जो इसकी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत है और इसलिए मैं ये प्रस्ताव रखता हूँ की हम इसकी पुराणी और पुरातन शिक्षा व्यवस्था, उसकी संस्कृति को बदल डालें, क्यूंकी अगर भारतीय सोचने लग गए की जो भी विदेशी और अंग्रेजी है वह अच्छा है और उनकी अपनी चीजों से बेहतर हैं, तो वे अपने आत्मगौरव, आत्म सम्मान और अपनी ही संस्कृति को भुलाने लगेंगे और वैसे बन जाएंगे जैसा हम चाहते हैं। एक पूर्णरूप से गुलाम भारत।"

लॉर्ड मैकाले द्वारा दिनांक 2.2.1835 को ब्रिटिस सरकार को लिखा गया पत्र एवं इसका हिन्दी में अनुवाद।

'Education' शब्द का अर्थ है 'To draw out virtues' अर्थात् व्यक्ति में अन्त:निहित गुणों को जागृत करना। सुप्तावस्था में रहने वाले अव्यक्त गुणों और शक्ति को जागृत करना। इस प्रकार की शिक्षा वैदिक काल में और तपोवनों में दी जाती थी। तपोवन में भोजन का आनन्द नहीं, बल्कि ज्ञान का आनन्द मिलता था। दीन ब्राह्मण का लड़का और चक्रवर्ती सम्राट का युवराज एक साथ बैठकर शिक्षा ग्रहण करते थे। कितना सुन्दर दृश्य रहा होगा वह। जिसके जीवन में ज्ञान के लिए जिज्ञासा एवं व्यवहार में नम्रता हो, उसे ही तपोवन में प्रवेश मिलता था। हाथ से भोजन बनाना स्वयं कपड़े धोना, अल्पाहारी भोजन करना, पोषक एवं सात्विक खुराक लेना व शीघ्र बर्तन साफ कर अभ्यास के लिए बैठना। ऐसी दिनचर्या रहती थी।

खेल भी शारीरिक श्रम वाले ही खेले जाते थे। ब्रह्मचर्यव्रत का पालन किया जाता था। जिसके कि कठिन सिद्धांतों को भी बालक आत्मसात कर लेता था। यज्ञोपवित संस्कार होते ही बालक को तपोवन में भेज दिया जाता था। विद्यार्थियों का अपने गुरु के प्रति एकनिष्ठ प्रेम होता था। उनके लिए गुरु से बढ़कर कोई नहीं था।

ऊँ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सहवीर्य करवाव है।

तेजस्वि नावधीमस्तु। मा विद्विषाव है।।

माता-पिता भौतिक शरीर प्रदान करते हैं, लेकिन गुरु हमें आध्यात्मिक, नैतिक जीवन प्रदान करते हैं। वे अणु- परमाणु तक के सूक्ष्म तत्वों का ज्ञान कराकर ज्ञान का समस्त भण्डार अपने विद्यार्थियों के सामने खोल देते थे। जिसकी जितनी ग्राहय शक्ति हो, वह उतना ले ले। गुरु शिष्य के बीच पवित्र भावना रहती थी, तभी तो संस्कारी और सुशील नागरिक बनकर बाहर निकलते थे।

मानवता के सम्पूर्ण गुण विकसित होते थे। वे ज्ञान सम्पन्न, चरित्रवान होकर बाहर निकलते थे। तपोपवन में रहने वाले विद्यार्थी को किसी संबंधी का विवाह होने पर भी अवकाश नहीं मिलता था। इतना ही नहीं, किसी संबंधी का स्वर्गवास होने पर भी उसका सूतक नहीं पालना पड़ता था।

केवल पिता की मृत्यु अपवाद थी। अन्यथा विद्याध्ययन पूर्ण होने पर समावर्तन संस्कार करने पर ही घर लौटता था और विद्याध्ययन के काल में जिनका स्वर्गवास हो चुका था। उनके लिए तीन दिवस तक सूतक पालता था। आज तो किसी निकट संबंधी के घर कार्य हुआ तो भी लड़के को घर पर रख देते हैं।

मस्तिष्क में अभ्यास के अतिरिक्त दूसरा विचार ही नहीं। उसे बौद्धिक, शारीरिक एवं मानसिक विकास की ओर एकाग्र होना पड़ता था। तपोवन में अध्ययन पूर्ण होने पर गुरु की अनुमति से ही बालक घर आता था। अध्ययन समाप्त होने पर गुरु की अनुमति से ही विवा करता था।

मैक्समूलर द्वारा वैदिक ज्ञान को लिपिबद्ध किए जाने से आज वह ज्ञान हमारे मस्तिष्क से गायब हो गया। आज हम अंग्रेज लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति से अध्ययन कर रहे हैं। अंग्रेजों को उनके ऑफिसों में काम करने वाले क्लार्क बनाने थे। उन्होंने हमारी प्राचीन गुरुकुल/ तपोवन पद्धति को तहस नहस कर दिया। आज बालक सम्पूर्ण शिक्षा ग्रहण करने के बाद भी राह भटक रहा है। जो शिक्षा हमें दी जा रही है।

वह 'विद्या' न होकर 'कला' है। केवल उदरपूर्ति की शिक्षा है। जीविका के लिए जो शिक्षा होती है, वह 'कला' ही है। जीवन विकास के लए जो शिक्षा होती है, वहीं 'विद्या' कही जाती है।

आज सरस्वती के मन्दिरों में स्वयं सरस्वती अस्वस्थ हुई है। बालक, पालक, शिक्षक, संचालक ये चारों स्तम्भ बिना भावना से खोखले बन गए हैं। लड़का सात्विक और अच्छा बना तो वह अच्छी तरह से जी सकेगा। ऐसा आज के मां-बाप को लगता ही नहीं है।

आज तो मां-बाप तय करते हैं कि उनका बेटा क्या बनेगा ? और वह अपनी योग्यता- अयोग्यता को जानकर भी मां-बाप की अपेक्षाओं के बोझ की गठरी अपनी सिर पर लादे अपनी जिन्दगी बिताता है।

विनय बी. त्रिवेदी,
राजसमंद

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका

आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..

अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

आपके शहर व गांव से जुड़ी
मूलभुत समस्या, नवाचार,
आयोजन, मुद्दे, लेख,
चुटकले, कहानी, कविता
हमें भेजे

E-Mail : jaivardhanpatrika@gmail.com

वैदिक ज्ञान ने दिलाई कसार को पहचान

ऊंचे- ऊंचे पहाड़, हरे भरे आम के पेड़ और उन पर बैठे पक्षियों की चहचहाहट के बीच गूंजती श्लोकों की ध्वनि हर किसी को आकर्षित कर देती है। अरावली की सूरम्य पहाड़ियों के बीच बसा छोटा सा कसार गांव, जिसे आज से करीब 25 वर्ष पूर्व बहुत कम ही लोग जानते थे। तब न तो कसार जाने के लिए पक्की सड़क थी और न आवागमन के साधन, मगर इन वर्षों में कसार में कई आमूलचुल बदलाव हुए।

सनातन वैदिक शिक्षण संस्थान के तत्वावधान में वैदिक शिक्षा के शिविर ने कसार गांव को समूचे देश में पहचान दिलाई। वैदिक ज्ञान के गुरुकुल का अवलोकन करने देश के कई गणमान्य संत, शिक्षाविद् एवं उच्च पदासीन अधिकारी व राजनेता कसार आ चुके हैं। कई लोग कसार को काशी का नाम देते हैं।

राज्य की मुख्यमंत्री अब तक तीन बार कसार आ चुकी है। साथ ही राज्यसभा सांसद ओम माथुर, केन्द्रीय मंत्री पीपी चौधरी, पूर्व शिक्षा मंत्री घनश्याम तिवाड़ी, पूर्व भाजपा अध्यक्ष अरुण चतुर्वेदी, पूर्व खनिज मंत्री लक्ष्मीनारायण दवे, पूर्व चिकित्सा मंत्री भवानी जोशी, पूर्व सांसद भानु कुमार शास्त्री, गिरिजा व्यास, हरिओमसिंह राठौड़, किरण माहेश्वरी, सुरेन्द्रसिंह राठौड़ सहित कई गणमान्य राजनेता कसार में संस्थान का अवलोकन कर चुके हैं। राजसमंद के पूर्व कलक्टर कैलाशचंद्र वर्मा का भी कसार से बड़ा लगाव रहा, वे कई बार कसार आए।

जनप्रतिनिधियों के आने से चारभुजा एवं सैवंत्री ग्राम पंचायत में कई सड़कें एवं अन्य कार्य भी हुए। कसार की प्राकृतिक छटा एवं वैदिक श्लोकों की ध्वनि बाहर से आए आगन्तुक को आकर्षित कर देती है। संस्थान के अध्यक्ष उमेश द्विवेदी के अनुज विकास दवे वर्तमान में सैवंत्री पंचायत के सरपंच है, जिन्होंने अपने प्रयास से सैवंत्री ग्राम पंचायत मुख्यालय के साथ ही कसार एवं आस पास के गांव-ढाणियों को पक्की सड़कों से जोड़ दिया है। इससे आवागमन की सुविधाएं बढ़ी है।

इसी तरह स्टेट हाइवे पर स्थित नीमड़ी से सैवंत्री तक नई सड़क के लिए निविदा जारी की जा चुकी है और जल्द कार्य शुरू हो जाएगा। इससे सैवंत्री में श्री रूपनारायण भगवान के दर्शनों के लिए जाने वाले श्रद्धालुओं को सुविधा मिलेगी।

मांगीलाल शर्मा,
सेवानिवृत प्रधानाध्यापक कसार

कसार में वाराही माताजी की श्रृंगारित प्रतिमा। इस मंदिर से मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे की भी आस्था जुड़ी है।

ये वो धर्मप्रेमी है, जो बालकों के भोजन में करते हैं आर्थिक सहयोग

श्री फतहचंद सामसुखा राजसमंद, श्री पवन शर्मा राजसमंद, श्री राजेन्द्र ओझा पूना, श्री हरीश उणेचा पूना, श्री संजय कुमार पूना, श्री अनिल कुमार बेड़िया गंगापुर, श्री रामप्रकाश बेड़िया भीलवाड़ा, श्री द्वारकाप्रसाद बेड़िया अहमदाबाद, श्री रामेश्वर लाल कांकाणी गंगापुर, स्व. श्री घासीराम बोहरा कांकरोली, श्री ललित श्रीगौड़ पूना, श्री जोरसिंह रोद का गुड़ा, श्री संजय वाजपेयी जोधपुर, श्री बाबूलाल राठौड़ चारभुजा, श्री बाबूलाल कोठारी केलवा, श्री महेन्द्र कोठारी केलवा, श्री हरिसिंह राठौड़ केलवा, श्री संजय पालीवाल केलवा, श्री नारायण रेबारी थोरिया, पाली जैन मार्केट पाली, श्री तख्तमल कोठारी गजपुर, ईनाणी मार्बल चित्तौड़गढ़, श्री गोपाल मालू कांकरोली, श्री ईश्वरलाल ओझा भींमालिया, श्री पुखराज त्रिवेदी सादड़ी, श्री मदनलाल वोरा सादड़ी, श्री गोपाल भाटी राती तलाई, हल्दीघाटी सिड्स कांकरोली, श्री कांतिलाल सोनी शिवगंज सिरोही, श्री जगदीश पालीवाल केलवा।

संस्कारात् द्विज उच्यते

अथ यदि ते कर्म विचिकित्सा वा वृत्त विचिकित्सा
वा स्यात् तथा तत्र व वर्तेथा तेतिर्य उप:।

शीक्षावल्ली

यदि तुम्हें अपने कर्म के विषय में अथवा अपने आचरण के विषय में कभी कोई शंका उठे, तो वहां जो पक्षपात रहित विचारवान ब्राह्मण हो। जो अनुभवी, स्वतंत्र, सौम्य, धर्म काम हो। उनके जैसे आचरण हो, उन्हीं आचारों का पालन करना चाहिए। उक्त आर्ष वचन गुरु गृह में विद्याध्ययन पूर्ण होने पर दीक्षांत उपदेश, उद्बोधन विद्यार्थियों को मिलता था और परिणामस्वरुप रामकृष्ण वशिष्ठ, विश्वामित्र, विवेकानंद, दयानंद, ध्रुव, प्रहलाद, प्रताप, शिवाजी जैसे कर्मवीर संतानों ने भारत भूमि को जगद्गुरु रूप में प्रतिष्ठित किया।

धीरज, क्षमा, संयम, अचौर्य, पवित्रता, कर्मेन्द्रिय, ज्ञानेन्द्रिय पर नियंत्रण, बुद्धि, विद्या, सत्य और शांति (अक्रोध) गुणों से युक्त संस्कारशील नई पीढ़ी के नवनिर्माण के दायित्व को निबाहता कसार स्थित सनातन वैदिक शिक्षण संस्थान। यह संस्थान गत 18 वर्षों से ग्रीष्मकालीन वैदिक संस्कार शिविर आयोजित कर आचार्य मनु के 'एतद् देशप्रसूतस्प सकाशाह अग्र जन्मन:' अर्थात् विद्वान कुलीन ब्राह्माणों, आचार्यों से अपने अपने चरित्र की सफल जीवन जीने की कुशलता संस्कारों की शिक्षा ग्रहण करें, ऋषि वचन को पूर्ण कर रहा है।

मेवाड़ अंचल का सौभाग्य है कि मेवाड़ के चार धामों में जगत प्रसिद्ध चारभुजा- रोकड़िया हनुमानजी, श्री रूपनारायण सैवंत्री के मध्य त्रिलोक से मथुरा न्यारी धर्म, तप भूमि कसार में द्विवेदी कुलोत्पन्न पं. कन्हैयालालजी द्विवेदी के अनुज पं. दुर्गाशंकरजी के पुत्र आधुनिक ऋषितुल्य पंडित उमेश द्विवेदी के प्रगतिशील प्रेरणादायी नेतृत्व ने अनवरत संस्कार शिविर आयोजित हो रहा है।

जहां राजस्थान सहित विभिन्न राज्यों से लगभग प्रतिवर्ष 350 से 400 संस्कार प्रशिक्षार्थी पंच-दस दिवसीय महत्तर आयोजन में सम्मिलित होकर नित्य दिनचर्या, नैमित्तिक कर्म, अनुष्ठान, पूजा-उपासना, रुद्राष्टाध्यायी, सप्तसती पाठ, ज्योतिष, वास्तु, षड़वेदांग का परिपुष्ठ ज्ञान प्राप्त कर अपने क्षेत्रों में भारतीय संस्कृति, वैदिक संस्कार, सदाचार में शिक्षित- दीक्षित होकर न केवल राष्ट्रभक्त उत्तरदायी युवकों, बालकों, ऋषिकुमारों का नवनिर्माण हो रहा है।

जो न केवल मेवाड़ वरन गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश व दक्षिण भारत सहित विदेशों में सोलह संस्कार वैदिक ऋचा गान, पूजा अनुष्ठान के लोक कल्याणकारी कार्यों से भारत की धर्म पत्ताका फहरा रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि सन् 2001 में स्थापित इस संस्थान के माध्यम से अब तक साढ़े पांच हजार शिविरार्थी प्रौढ़ युवा बालक लाभान्वित हुए हैं, जिन्हें उच्च कोटी के वैद मर्मज्ञ, ज्योतिर्विद पं. कन्हैयालालजी, बद्रीलालजी, मांगीलालजी, दुर्गाशंकरजी, मोहनलालजी का संरक्षण, मार्गदर्शन के साथ भारत प्रसिद्ध मेवाड़ महामंडलेश्वर श्री मुरलीमनोहर शरण शास्त्री, पंडित भानु कुमार शास्त्री, राजेंद्र मिश्र, ताराशंकर पांडेय, रामकृष्ण शर्मा, डॉ. शक्ति कुमार, राजस्थान संस्कृति अकादमी के गणमान्य निर्देशक, अध्यक्ष अनेकानेक राज्य व राष्ट्रीय जनप्रतिनिधि व राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे सहित संत महात्माओं और श्रीपतियों का सानिध्य अभिनंदन भाव प्राप्त हुआ।

निश्चय ही आचार्य प्रवर पं. उमेश द्विवेदी, पं. जितेंद्र शर्मा, पं. योगेश त्रिवेदी, पं. भरत पानेरी, पं. प्रशांत शर्मा, पं. विनोद त्रिवेदी प्रभृति वेदविज्ञ कर्मकांड निष्णात संस्कृति संस्कार प्रेमी युवा ब्रह्म मण्डल बधाई, अभिनंदन, बहुमान के योग्य है। जो स्मरणीय, प्रेरणीय संस्कार, परम्परा, संरक्षण, संवर्द्धन में अहर्निशरत हो सम्पूर्ण समाज प्रेरणास्त्रोत बने हैं, वंदनीय है।

प्रत्येक प्रबुद्धजन का इस सत्कार्य में तन-मन-धन से सम्पूर्ण सहकार तो मिलेगा ही अपने बटुकों को ऐसे महत्तीय आयोजन में प्रतिभागी, संभागी बना पं. उमेश द्विवेदी के शिव संकल्प को साकार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

शिवास्ते सन्तु

प्रस्तोता
सुरेन्द्र भीमशंकर द्विवेदी
प्राचार्य निम्बार्क शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय उदयपुर
अध्यक्ष- उदयपुर राजसमंद संभागीय

अघोषित अभ्यास

प्रेम के साथ पानी का होना
पानी के साथ प्यास का होना
सभ्यता के लिए आवश्यक
प्रेम, पानी और प्यास
आपस में है अवलम्बित
एक के ही नहीं होने पर
घूमती हुई पृथ्वी रूक ही जाएगी
जहां प्रेम, वहां है पानी
जहां पानी है, वहीं कहीं होती प्यास
ये अपनी अपनी उपस्थिति से
प्राणों का निरन्तर करते हैं संचार
और घूमती हुई पृथ्वी लेती है विस्तार।

संध्या वंदन की वेला में
पूछा था प्रश्न अबोधता के चलते
रवि को समर्पित किए जाने वाले
शुचि अर्घ्य के संबंध में पिता से
पिता का सहज उत्तर था-
जल को उठाकर आकाश से मिला
फिर समर्पण के लिए परित्याग में
जलाजंलि मिलती पवन और तेज से
फिर आ मिलती धरा से
पंचतत्व को आपस में
मिलाने की है यह प्यास
साथ ही सृजन और सभ्यता को
बनाए रखने के लिए
यह प्रेम का अघोषित अभ्यास।

पिताश्री के गंभीर उत्तर का
आज भी करता हूं स्मरण
और चिंतता हूं,
हमारे लिए भी जीवन में
यह सृजन और सभ्यता को
को संयोजित करने का
प्रेम को बनाए रखने का
यजन- संकल्प आज भी प्रासंगिक।
प्रेम और पानी के मध्य
अघोचर प्यास की भ्रमरी
निरन्तर विह्वल होती पृथ्वी के साथ
घूमती हुई डोलती रहती
जिसके कारण ही प्रेम और पानी
पृथ्वी के विकसन के हेतु
सदा उपस्थित रहते सहचर के जैसे
जब यह सब सच है कि पृथ्वी घूमती रहे
प्रेम, पानी और प्यास अस्तित्व में रहे
फिर सोचो कितना अप्रासंगिक है
हमारा कई कई वर्गों में बंटते जाना।

त्रिलोकीमोहन पुरोहित
साहित्यकार एवं शिक्षाविद् राजसमंद

बोलियां और उनकी मिठास

मैं राजस्थान में रहता हूं। मेरे ज्यादातर नजदीकी रिश्तेदार गुजरात या मुम्बई में रहते हैं। पिछले दिनों अपनी मुम्बई यात्रा के दौरान मैंने एक खास बात नोट की। मेरे ज्यादातर रिश्तेदार राजस्थान से बाहर रहते हुए भी अपने घरों में मेवाड़ी अथवा मारवाड़ी भाषा में ही बात करते है। यहां तक कि उनके बच्चे भी घर में मेवाड़ी बोलते हैं।

उन्होंने पीढ़ी दर पीढ़ी आज भी अपनी बोली व उसकी मिठास को ज़िंदा रखा है। जबकि हम यहां राजस्थान में रहने वाले अपने घरों में हिंदी का प्रयोग करने लगे है और इस वजह से शायद हमारे बच्चे राजस्थानी भाषा से अनजान ही है।

हालांकि मैं ज्यादा सफर नहीं करता, पर फिर भी बोलियों और भाषाओं के मामले में जितना समझ पाया हूं। उस हिसाब से किसी भी राज्य की भाषा चाहे एक है, पर राज्य के अलग अलग क्षेत्रो में बोलियों का अपना एक अलग ही रंग है।

राजस्थान के मेवात (अलवर के आसपास के इलाके) की बोली में व्यवहारिकता और मिठास का अभाव है। सम्मानसूचक शब्द ढूंढे से भी नही मिलेंगे। आपकी बजाय 'तू' का प्रयोग ज्यादा होता है। शायद कुछ हद तक हरियाणवी लहजा।

वहीं मेवाड़ी में बेहतर सम्मानसूचक शब्द मिलते है। शुद्ध मेवाड़ी सुनने में मीठी लगती है, पर ज्यादातर राजघरानो में राजपूत समुदाय ही शुद्ध मेवाड़ी बोलते है, जिसमें हुकुम फरमाओ सा, बोलिये, जिमो सा, भोजन अरोगो सा जैसे शब्द उपयोग किए जाते हैं, जो सुनने में भले लगते हैं। इन सब से इतर शुद्ध मारवाड़ी और गोरवाड़ी (जोधपुर संभाग) सबसे ज्यादा मीठी भाषा मानी जाती है, जिसमें हर शब्द में सम्मान झलकता है।

'आना' शब्द को मेवाड़ी में 'आजे' बोला जाता है। वहीं मारवाड़ी में इसे 'आइजे' कहा जाता है, जो सुनने में ज्यादा मीठा मालूम पड़ता है। डांट भी मीठी सी लगती है। एक बानगी देखिए...

हिंदी : तुझे सुनाई नहीं देता क्या ?

मेवाड़ी : थुं हुणै नी कई ?

मारवाड़ी : थानें सुनीजे कोनी के ?

ऐसा ही कुछ गुजराती भाषा में भी है। पश्चिमी गुजरात में बोली जाने वाली कच्छी और सौराष्ट्र की भाषा सुनने में ज्यादा मीठी लगती है। बनिस्पत मध्य और दक्षिणी गुजरात की भाषा के।

एक ही शब्द को अलग अलग तरह से बोला जाता है, जो सुनने में मीठा या कड़वा लगता है। जैसे कि 'दिन' को गुजराती में 'दिवस' बोला जाता है। पर जब बात खड़ी बोली कि हो, तो दक्षिणी गुजरात में दिवस को 'दाडा' या 'द्हाड़ा' बोला जाता है।

जबकि सौराष्ट्र में दिवस को 'दी' कहा जाता है, जो सुनने में द्हाड़ा से ज्यादा मीठा लगता है।

'काम किया' को मध्य गुजरात में 'काम पतावी नाख्यु' बोला जाता है, जबकि सौराष्ट्र में 'काम कयरीयू' कहा जाता है, जो कानों को ज्यादा सरस लगता है।

वहीं आंध्रप्रदेश में बोली जाने वाली तेलगु भाषा में भी तेलंगाना की तेलगु कुछ हद तक रॉयलसीमा वाली तेलगु से ज्यादा मीठी लगती है। हालांकि हम उत्तर भारत वालों को तो ये भाषा ही लड़ती झगड़ती सी लगती है, पर फिर भी बेसिकली तेलंगाना वाली तेलगु ज्यादा मीठी है।

तेलगु में 'बैठना' शब्द के लिए 'कुच्चो' और 'बोलना' शब्द के लिये 'चप्पो' शब्द का उपयोग होता है।

तेलंगाना में सामान्यत: किसी को बैठने के लिए कहना हो तो कहा जाता है 'कुच्चन्डी' मतलब कि 'बैठिये जी' जबकि रायलसीमा की तरफ सिर्फ कुच्चो बोलकर ही काम चला लिया जाता है। ठीक वैसे ही तेलंगाना में 'बोलने' के लिए 'चप्पो' की जगह 'चिप्पन्डी' कहा जाता है, जो कि सम्मानसूचक है।

बोलियों के साथ मान मनुहार और अतिथि का आदर सत्कार भी जुड़ा हुआ है। अक्सर देखा जाता है कि जो क्षेत्र प्राकृतिक रूप से ज्यादा समृद्ध है। वहां कि बोली में मिठास और व्यवहार में मान मनुहार की कमी रहती है। वहीं वो जगह जहां प्रकृति ने बहुत कम दिया है। वहां के लोग बात के और व्यवहार के धनी होते है। पश्चिमी राजथान, पश्चिमी गुजरात जाकर ये बात आप स्वयं महसूस करेंगे। वहां के लोगों में अनजानों के प्रति भी एक गहरे लगाव कि भावना नज़र आएगी। जबकि प्राकृतिक रूप से ज्यादा समृद्ध पूर्वी राजस्थान, मध्य या दक्षिण गुजरात, महाराष्ट्रा या दक्षिण भारत में इसका पुरी तरह अभाव मिलेगा। दक्षिण भारत में तो अतिथि सत्कार का बुनियादी ज्ञान भी देखने को नहीं मिलता। हो सकता है, शायद अभावों में ही व्यक्ति का व्यवहारिक ज्ञान निखर कर सामने आता है। एक दूसरे से अपनेपन के भाव जन्म लेते हैं। ये बोलियां और इनकी मिठास आतिथ्य महुनहार और हमारा ये अपनापन जताने का भाव हमेशा जिंदा रहे। ऐसा प्रयास हमें करते रहना चाहिए। पीढ़ी दर पीढ़ी ये फले फुले यही कामना।

दीपक जैन चोरड़िया
कांकरोली, राजसमंद

नारी

ईश्वर ने बनाकर के धरा की एक प्रतीकात्मक प्रतिमा शृंगारित कर दिया। शालीनता, सहिष्णुता, सहनशीलता, प्यार, धैर्य एवं साहस के रत्न जड़ित लाज, समर्पण और ममता रूपी हार से और धरा की ऐसी प्रतिमा का नाम रख दिया 'नारी'।

नारी की प्रतिमा के पात्रों में बेटी है, बहन है, पत्नी है और एक मां भी है। पात्र के अनुसार शृंगार बदलता रहता है। अपने पात्र के प्रति समर्पण नारी का विशेष गुण है।

वो जिस पात्र को निभाती है, उसमें वह सर्वस्व इतना उंड़ेल देती है कि उसमें उस पात्र का अस्तित्व नजर आता है और लगता है कि अगर जिन्दगी के रंगमंच पर ये पात्र ना होता तो ये सूनापन कहीं ना कहीं जरूर रह जाता।

वह कभी बेटी बनकर प्रेरणा का प्रतीक बनती है, जो बचपन की अठखेलियों से लेकर बड़ी होने तक अपनी सहिष्णुता और समझदार बेटी होने की दरकार देकर बेटी होने का अहसास समय समय पर कराती रहती है।

जब वह बहन का शृंगार कर अपना पात्र निभाती है, तो अगर छोटी है तो भाई को बेटी का आभास करा देती है और बड़ी है तो छोटे भाई बहन पर इतनी ममता न्योछावर कर देती है कि उन्हें उसमें मां के अस्तित्व का बोध होने लगता है।

नारी सम्मान में

जीवन का संगीत है नारी
मधुर प्रीत का गीत है नारी
सत्कर्मो की सघन साधना
धैर्य, धरम की जीत है नारी

सहनशील, शालीन भरी ये
सत्कारों की रीत है नारी
सीरत और संस्कार सिखाती
मन भावन मन मीत है नारी

सोम्य, सुहानी, सुमन, सारिका
लजवन्ती शृंगारी नारी
त्याग, तपस्या की मूरत है
सूरत चांद खुमारी नारी

कोमलता की कली कामिनी
कोकिल कंठ कुमारी नारी
वन, उपवन, मधुबन, महकाती
फूलों की फुलवारी नारी

मन चंचल, चित्तचोर, पपीहा
तन केसर की क्यारी नारी
प्रीत, प्रेम की पावन धरणी
ममता की महतारी नारी

चटक, चंद्रिका, चमक, चांदनी
भोर किरण उजियारी नारी
ढली सांझ की सुरमई वेला
गौधुली सी प्यारी नारी।।

नारी की सबसे प्यारी प्रतिमा 'मां' के रूप में है। जब वह प्यार एवं ममता के रत्नों में जड़ी हुई मासूम अनुशासित और संस्कारित नजर आती है। कोई परिवार कितना शिक्षित और अनुशासित है। यह उसके सामाजिक स्तर को इंगित करता है, तो कोई परिवार कितना संस्कारित एवं व्यहारिक है। यह उस परिवार की मां की विलक्षणता का आभास दिलाता है।

नारी का सबसे महत्वपूर्ण पात्र है। पत्नी के रूप में जिसमें सभी आवरण शृंगारित होते हैं। शर्म, समर्पण और प्यार इस शृंगार के विशेष रत्न है, जो हमेशा जगमगाते हुए नारी में पत्नी के अस्तित्व का बोध कराते रहते हैं।

नारी की सुन्दरता को बयां कोई भी व्यक्ति केवल पत्नी के रूप ही कर सकता है, जबकि मां की ममता एवं बेटी व बहन के प्यार का अहसास कर सकता है, देख नहीं सकता। क्योंकि ममता एवं प्रेम देखने की नहीं, वरन् अहसास करना मात्र है।

शृंगारित नारी की सुन्दरता को देखकर सुन्दरता को भी उससे ईर्ष्या होने लगती है। ये सुन्दरता भी नारी का ही स्वरूप है। उसमें ईर्ष्या होना स्वाभाविक है। क्योंकि खूबसुरत नारी से जलन या ईर्ष्या भी नारी का गुण है।

पनघट पनिहारिन के रूप मे शालीनता का परिचय देने वाली नारी समय आने पर माथे पर कफन बांधकर झांसी की रानी बनकर साहस और वीरता का आभास भी करा देती है। नारी को पूर्ण शृंगारित कर दर्पण के सन्मुख खड़ा किया जाए, तो नजर आता है कि हर शृंगार में अलग अलग प्रभावशाली होते हुए भी एक बात की समानता है और वह है, उसकी मासूमियत जो सबमें बरकार रहती है। चाहे बेटी, बहन, मां या पत्नी हो। नारी का कैसा भी रूप हो चाहे मां की ममता का या वीरता एवं साहस भरी चंडिका का, पर उसकी सोम्यता एक जैसी विद्यमान रहती है, जो कि नारी को धरा के प्रतीक के रूप मे दर्शाती है क्योंकि धरा ही हर रूप में सोम्यता भरी नजर आती है। इसीलिए नारी को धरा का प्रतीकात्मक स्वरूप भी कहा गया है।

इति
प्रमोद सनाढ्य 'प्रमोद'
राजसमंद

तीखी मिर्ची

कम्पीटीशन

विजय शर्मा @ राजसमंद
liverajsamand.com (94142 39648)

ये कम्पीटीशन युग है। आजकल हर अखबार, टीवी, मोबाइल, स्कूल-कॉलेज हर जगह कम्पीटीशन चल रहा है। हर बाप अपने बेटे को दूसरे से आगे निकलने के लिए प्रेरित कर रहा है। ये रिकॉर्ड तोड़ने का सिलसिला अब राजनीतिक पार्टियों में भी जबरदस्त चल रहा है। ऐसे में भाजपा अपने अधिक से अधिक राज्यों में अपनी सरकार बनाने की होड़ में लगी हुई है, तो विरोधी दल उसे रोकने में लगे है।

कम्पीटीशन में ज्यादा जल्दबाजी भी अच्छी नहीं होती। कभी कभी जल्दबाजी के कारण अपने मुंह की भी खानी पड़ जाती है। भाजपा साम, दाम लगाकर सत्ता हासिल करने के जुगाड़ में अपनी फजीहत करा गई। ऐसे में कांग्रेस ने भी भाजपा को रोकने के लिए मुख्यमंत्री पद का त्याग करते हुए सहयोगी पार्टी को यह मौका दिया।

वैसे गांधी, नेहरू खानदान ने सर्वाधिक कुर्सी पर चिपके रहने के बावजूद कभी कुर्सी का मोह नहीं रखा। तभी तो सोनिया गांधी ने प्रधानमंत्री पद का त्याग कर मनमोहन जैसे मौन आदमी को यह मौका दिया। जिसे इतिहास में लिखा जाना चाहिए, मगर उस दौरान घोटालों की लिस्ट के कारण पेज कम पड़ जाए, तो सोनियाजी के इस त्याग की कहानी वंचित रह सकती है। कांग्रेस की घटती लोकप्रियता और फिसलते राज्य को देख कर वर्तमान में सभी दल भाजपा के विरोध में एकजुट हो गए हैं। यह शास्त्रों में भी लिखा है कि विपत्तीकाल में अपने राग द्वेष भुला कर एक हो जाना ही श्रेष्ठ है। अब देखना यह है कि वर्ष 2019 के कम्पीटीशन में क्या होता है।

वैसे इन दिनों सूरज और पेट्रोल की कीमत में भी तगड़ा कम्पीटीशन चल रहा है। सूरज अपना 1 डिग्री तापमान बढ़ाता है, तो 2 रुपए पेट्रोल बढ़ता है। ऐसे में सत्तापक्षी पिच्छलग्गु यहां तक कहते हैं कि पेट्रोल की कीमत भरी गर्मी में लोगों को राहत देने के लिए बढ़ाई गई है, जिससे कि लोग घर से बाहर कम निकले। वहीं विपक्षी दल पेट्रोल की बढ़ी कीमत के विरोध में बैलगाड़ी पर मोटरसाइकिल रख कर व साइकिल चलाकर विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं, मगर अब साइकिलें यूपी से लेकर पूरे देश में पिंचर होती जा रही है।

कांग्रेस ने जो गलती की, जिसके कारण उन्हें सत्ता से हाथ धोना पड़ा। आजकल वही गलती फिर भाजपा भी कर रही है। वह गलती है, सत्तामद में जनता की आवाज को नजरअंदाज करना। जिस प्रकार भाजपा की अटलबिहारी सरकार को आलू-प्याज की कीमत सत्ता की बेदखली के रूप में चुकानी पड़ी। वैसे ही पेट्रोल-डीजल की कीमत 2019 के सरकार के सपने को न जला देवें।

हां मैं जलचक्की हूं

इस शहर के सर पर श्रीनाथ का आशिष है,
हां मेरे शहर के मालिक प्रभु द्वारिकाधीश है,
झील की अनुपम आभा के दृष्य बड़े विहंगम है,
पर सारी राहो का देखो मेरे यही तो संगम है,
सबको लगता है सबकी राहे,
सब दिशा में मोड़ती हूं,
पर जो गौर से देखो तो
जानोगे सबको सबसे जोडती हूं।
रात को चन्द्र सी शीतल हूं,
दिनभर धूप में जलती हूं
इस शहर की भागदौड़ में
सबके संग संग मैं चलती हूं
यहीं पर शिव चौमुखा बिराजे
पुरी सृष्टी ज़िनके भरोसे है
यहीं कचोरी किशनजी की,
तो यहीं डूंगाबा के समोसे है
राजसिंहजी के आने से भी
खूब बढ़ा मेरा सम्मान है।
इतने मनोरम शहर का हिस्सा हूं
इसका मुझको अभिमान है।
कितना कुछ है मुझमें समाहित
देखो मैं कितनी लक्की हूं।
हां मैं जलचक्की हूं।
यहां रुके बिना अधूरा सीटी का हर फंक्शन है,
चाहे रैली हो या रेला, सबका यहीं पे जंक्शन है।
कुछ अच्छा हो या अनुपम हो,
होता सबका जय घोष यहीं है।
जो हो जाए अगर गलत कहीं,
तो उसका भी अफसोस यहीं है।
चाहे स्वागत हो या हो विरोध, सब कुछ यहीं पर करना है,
यहीं पर जलसा और जलूस, तो यहीं पर हर एक धरना है।

जन्माष्टमी पर ढोल नगाड़े, यहां खूब ही बजते हैं,
गणेश पर्व पर यहां गणपति नित नए रूप में सजते हैं
हर हल्ले की हुंकार यहीं है, हर रैली की ललकार यहीं है।
शहर में आने वाले हर एक शख्स का,
होता पहला सत्कार यहीं है।
तेज दौड़ती गाड़ियों की भी
रुकती रफ्तार यहीं है,
लाल बत्ती के रूप में सबसे
सक्रिय थानेदार यहीं है।
एक पेट्रोल पम्प पर
खूब ग्राहकी,
तो दूजे का
बंटाधार यहीं हैं।
पीने का है गर
शौक आपको,
तो वो देखो
टांक बार यहीं है।
होगी दुनिया बहुत बड़ी
पर अपना तो संसार यहीं है,
हां क्योंकि मेरे तो सब
यार यहीं है,
हां जेसी की झंकार यहीं है।
निंबसिंह जैसे शहीदों की भी,
हां होती जय जयकार यहीं है।
कोई झूठ नहीं जो बोलू कि अपने शहर का असली सार यहीं है।
हां शहर की साथी पक्की हूं,
मैं उसकी सच्ची तरक्की हूं। जी हां मैं जलचक्की हूं।

हेमेन्द्रसिंह,
राजसमंद 89529-05151

दारूड़ी

दारूड़ी में धन गयो, थे दारू पीणो छोड़ दो।
मनखपणा रा लखण ले लो, बोतला थे फोड़ दो।।
माउड़ी हे आ नागड़ी, घर में राड़ लावे।
बोतल पुरी पीदा केड़े, माथे जरबा चावे।।
दारू पीणो छोड़ दो, मानो प्रीतम रो कहणो।
मनखपणा रा लखण ले लो, मारे कई लेणो।।
दारूड़ी में जतपुती डूबी, डुबी धोली धार।
कलाली का घर बण ग्या, कमीण बण ग्या नार।।
दारू पीता माउड़ीरो, राता राखता नैण
रजपुती वा चालती, मुजरा करता भाई से।।

दारूड़ी में वट गयो, रेईगी हुखी डोपर।
घरे उंदरा करे अमावस, बापू वण ग्या लोपर।।
दारूड़ी थे पिवता, दे दे डोडी मनवारा।
रूपचन्दजी खुट ग्या तो, छोड़ गया लारा।।
दारूड़ी तो ले डूबी, सारा राज पाट।
मेल मालिया बिक गया, पोली वेगी टाट।।
चेत सको तो चेतो मउड़िया, नहीं तो थे पचथाओला।
केण प्रीतम रो नहीं मानियो तो, बे मौत मर जाओला।।

बी.एस. चुण्डावत 'प्रीतम'
आमेट, राजसमंद मो. 94132 87301

सनातन वैदिक शिक्षण संस्थान के वैदिक संस्कार शिविर की झलकियां

परिवार कल्याण समितियों की सार्थकता

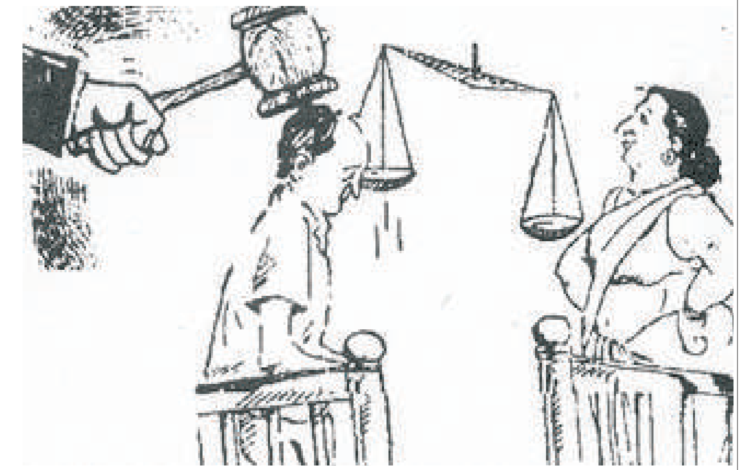

राजेश शर्मा बनाम उत्तरप्रदेश राज्य के मामले में 27 जुलाई 2017 को उच्चतम न्यायालय द्वारा निर्णय उद्घोषित करते हुए देश के प्रत्येक जिले में परिवार कल्याण समितियों की स्थापना के निर्देश दिए गए। इन समितियों को भारतीय दण्ड संहिता 1860 की धारा 498क की परिधि में आने वाले मामलों की समीक्षा कर अपनी राय संप्रेषित करने का कार्य सौंपा गया। धारा 498क महिलाओं के साथ पति अथवा पति के नातेदारों द्वारा क्रूरतापूर्ण आचरण किए जाने से संबंधित है।

समितियों के समक्ष वे मामले आते हैं, जो किसी न्यायालय में परिवाद के तौर पर अथवा पुलिस थानों में प्रथम सूचना रिपोर्ट के तौर पर दर्ज किए जाते हैं। इन मामलों में न्यायालय अथवा पुलिस थानों में तब तक कोई कार्यवाही नहीं की जाती, जब तक परिवार कल्याण समितियों की रिपोर्ट प्राप्त नहीं हो जाती।

परिवार कल्याण समिति में एक अध्यक्ष एवं दो अन्य सदस्य होते हैं। समिति द्वारा दोनों पक्षों (पति व पत्नी) को समिति के समक्ष उपस्थित होने का नोटिस जारी किया जाता है। दोनों पक्षों को सुना जाता है एवं उनमें समझाइश के प्रयास किए जाते हैं। प्रत्येक सप्ताह में समिति की एक बैठक होती है तथा एक माह में समिति को अपनी रिपोर्ट जिला विधिक सेवा प्राधिकरण्सा को देनी होती है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि समितियों के अब तक के कार्यकाल में अच्छे परिणाम सामने आए हैं। समितियों द्वारा अनेक मामलों में राजीनामा कराया गया है तथा कई टूटे हुए परिवारों को पुन: जोड़ा गया है। इसमें धन एवं समय की बर्बादी पर अंकुश लगा है।

अभी अभी उच्चतम न्यायालय में उक्त फैसले पर पुनर्विचार की याचिका पेश की गई है। याचिका में परिवार कल्याण समितियों का विरोध करते हुए धारा 498 क में मामलों में तत्काल गिरफ्तार किए जाने की व्यवस्था को बहाल करने की मांग की गई है। याचिका में यह भी कहा गया है कि उक्त फैसले से धारा 498 क का प्रभाव कम हो गया है। उसमें निहित शक्ति समाप्त हो गई है।

यहां यह गौरतलब है कि पिछले कुछ समय से धारा 498 क का घोर दुरुपयोग होने लगा है। छोटी छोटी बातों को लेकर पत्नी द्वारा पति एवं नातेदारों के खिलाफ पुलिस थानों में दहेज की मांग को लेकर यातना देने की शिकायतें की जाने लगी है। इन शिकायतों में केवल पति को ही नहीं, अपितु उसके सम्पूर्ण परिवार को लिप्त कर दिया जाता है, जबकि उनका घटना से कोई सरोकार ही नहीं होता है। अधिकांश शिकायतें मिथ्या एवं मनगढ़त होती है। बात कुछ और होती है और उसे दहेज की मांग का रूप दे दिया जाता है। ऐसे मामलों में कई बार पुलिस अधिकारियों द्वारा भी इसका दुरुपयोग करते हुए देखा गया है। पत्नी का मकसद पति को तंग एवं परेशान करना तथा अपना स्वार्थ सिद्ध करना रह जाता है।

एक बात और है, जिन महिलाओं को इस धारा का लाभ मिलना चाहिए। वे तो अभी भी इससे वंचित है और अति जागरूक महिलाएं इस धारा का नाजायज लाभ उठा लेती है।

ऐसी स्थिति में धारा 498 क को नंगी तलवार के रूप में छोड़ देना परिवार एवं समाज के लिए अन्त्यंत घातक है। इसका उपयोग ढाल के रूप में किया जाए। इसके लिए परिवार कल्याण समितियां सार्थक है। धारा 498 क को संतुलित करना प्रासंगिक एवं आवश्यक है।

डॉ. बसंतीलाल बाबेल
पूर्व न्यायाधीश,लावासरदारगढ़,
आमेट, जिला राजसमंद

स्वतंत्रता सैनानी मेवाड़ के पुरोधा ठाकुर ईश्वरदान आशिया ने जगाई थी आजादी की अलख

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजू ए कातिल में है।।

मंगल पाण्डे से शुरू हुई अंग्रेजों के विरूद्ध क्रांति की मशाल 1857 से 1945 तक निरन्तर जलती रही। देश गुलामी की जंजीर से मुक्त हो, आजादी की हवा में सांस लेना चाहता था। जब हम देश के स्वतंत्रता सेनानियों का जिक्र करते हैं, तो मेवाड़ के भी अनगिनत नाम जेहन में उभरकर आते हैं।

आज हम बात करते हैं मेवाड़ पुरोधा ठा. ईश्वरदानजी आशिया की। आपका जन्म विक्रम संवत 1952 आषाढ़ कृष्णा आठम को ठिकाना मेंगटिया (राजसमन्द) मेवाड़ के ठा. श्रीजवानसिंह जी आशिया के घर हुआ जो कवि और प्रतिष्ठित व्यक्ति थे।

आपकी प्रारंभिक शिक्षा महाराणा हाई स्कूल उदयपुर से हुई, मगर आप जब पांचवी क्लास में थे, आपकी माता का देहान्त हो गया। आपके पिताजी के साथ मैयो कॉलेज के एक छात्रावास में रहने लगे, जहां जवानसिंह जी देलवाड़ा उदयपुर राज्य का प्रथम ठिकाना राजराणा सिंह जी के पुत्र के संरक्षक थे। पिताजी ने आपका दाखिला अजमेर में दयानंद एग्लों वैदिक हाई स्कूल में दिला दिया।

ठा. केसरीसिंह बारहठ की पुत्री चन्दमणी से विक्रम संवत् 1969 को विवाह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर केसरीसिंह जी के क्रांतिकारी सहयोगी पंडित विष्णु दत्त और सोम दत्त लहरी भी उपस्थित थे। शादी के बाद ईश्वरदान की शिक्षा का दायित्व केसरीसिंह जी ने ले लिया और उनकी क्रान्तिकारी शिक्षा का क्रम प्रारंभ हुआ।

अपने पुत्र प्रतापसिंह बारहठ के साथ अपने जामाता (दामाद) ईश्वरदान जी को भी सेठी अर्जुनलाल जी द्वारा संचालित वर्द्धमान जैन विद्यालय जयपुर भेज दिया।

यहां अहिंसा धर्म प्रचार के साथ नवयुवकों को देश की स्वतंत्रता हेतु सशस्त्र क्रान्तिकारी प्रशिक्षण दिया जाता था। संस्था के माध्यम से विद्यार्थियों को काल और केसरी जैसे आग उगलते मराठी अखबार पढ़ने को मिलते थे।

सेठीजी अपने मनोनुकूल विद्यार्थियों को चुनकर यथेष्ठ स्थानों पर क्रान्तिकारी कार्य के सम्पादन और प्रशिक्षण के लिए भेजा करते थे।

इसी क्रम में प्रतापसिंह बारहठ छोटे लालजी और ईश्वरदान जी आशिया को दिल्ली के अमर शहीद रासबिहारी बॉस के सहयोगी मास्टर अमीर चन्दजी के पास भेज दिया।

जहां देश की स्वतंत्रता के लड़ने वाले अवध बिहारी, बंसन्त कुमार विश्वास और आजाद हिन्द फौज के संस्थापक रास बिहारी बोस और शचीन्द्र के सम्पर्क में आए।

जब मा. अमरचन्द जी ने प्रतापसिंह, जोरावरसिंह और ईश्वरदानजी को रासबिहारी बोस से मिलवाया, तो तब खुश होकर रासबिहारी जी ने कहा- ऐसे उदाहरण तो है कि पिता ने अपने पुत्र को देश की बलिवेदी पर चढ़ने को भेज दिया, किन्तु मेरे सामने केसरीसिंह जी का पहला उदाहरण हैं, जिसने अपने भाई, पुत्र के साथ अपने जामाता को भी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए क्रांति के पथ पर भेज दिया।

ठा. केसरीसिंह बारहट को महन्त प्यारेराम की हत्या के आरोप में गिरफ्तार करने के बाद ब्रिटिस सरकार ने राजपुताने के सभी क्रान्तिकारियों को गिरफ्तार करने की मुहिम चला दी। अर्जुन लाल सेठी, विष्णुदत्त सोमदत्त, राव गोपालसिंह को गिरफ्तार कर लिया। प्रतापसिंह को गिरफ्तार कर इन्दौर के पुलिस सुपरीडेंट कार्लेकर ईश्वरदान आशिया को मेंगटिया गांव से गिरफ्तार कर उदयपुर ले गए और रियासती पुलिस को सुपुर्द कर दिया।

उन्हें बेड़ियो में जकड़ कर रखा और कठोर यातनाएं दी। तीन महीने की तफ्तीश के बाद सबूत के अभाव में उन्हें रिहा कर दिया। विजयसिंह पथिक 1920 में समाचार पत्र निकालने का निश्चित किया ! यह पत्र मेवाड़ की बजाय वर्धा से प्रकाशित कर और इसका नाम राजस्थान केसरी रखने का निश्चय किया, जिसमें सह सम्पादक की जिम्मेदारी ईश्वरदान जी आशिया ने निभाई।

राजस्थान केसरी पूरे देश में बड़ा प्रसिद्ध हुआ। आप मरुभारती के सहसम्पादक भी रहे। मेवाड़ चारण सभा एवं श्री भूपाल चारण छात्रावास उदयपुर की संस्थापना में आपने महत्वपूर्ण योगदान दिया। अखिल भारतीय चारण सम्मेलन के मुख्यपत्र श्चारण के सम्पादक भी रहे। आप वीर सतसई के सम्पादकों में भी रहे आपने कोलकाता साहित्य शोध एवं संग्रह संबंधित कार्य सम्पन्न किया।

आपकी रूचि हिन्दी, डिंगल और गुजराती साहित्य में रही ! आप हिन्दी अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, डिंगल, पिंगल, बांग्ला भाषा पर अच्छी रूची और पकड़ रखते थे। आप जब सांतवीं कक्षा में थे, तब आपके पिताजी का स्वर्गवास हो गया। आपने बचपन से दुख देख कर भी सहनशील, स्वावलम्बी बने रहे और खेती का कार्य करने लगे ! खेतों के विवाद के झगड़े में बीच बचाव में आप अपना दाहिना हाथ हमलावर के हथियार के वार से गंवा बैठे।

मगर एक हाथ से ही लेखन कार्य करते रहे। बिजोलिया किसान आन्दोलन के प्रणेता विजयसिंह पथिक से ईश्वरदान जी का मिलन उस समय हुआ, जब वे फरारी का जीवन व्यतीत कर रहे थे। इसी समय उन्होंने कांकरेली के पास भाणा ग्राम में पाठशाला स्थापित की। सरकार की आंखों से बचने के लिए वे मेवाड़ में मोही के ठाकुर डूंगरसिंह भाटी की प्रेरणा से कंवर अमरसिंह जी के शिक्षक बन गए।

आप सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धांत के मूल्य को महत्व देते थे। सन् 1920 के बाद आप जीवन भर खादी के वस्त्र पहनते रहे। योग व्यायाम और आधात्म, ध्यान में विश्वास रखते थे। आपने धन मकाने की जगह हमेशा देश सेवा को अपना लक्ष्य बनाया। खेती से अपना गुजारा चला लेते थे। समाज की कुरीति दहेज प्रथा, मृत्युभोज, बाल विवाह, छुआ छूत का हमेशा विरोध किया।

आपके परिवार में आपके चार पुत्र मणिराज, देवराज, रघु राज और बृजराज तथा तीन पुत्रियां सुशीला, सुभद्रा, सुमित्रा है। आपने अपने पारिवारिक दायित्व का निर्वाह करते हुए। देशहित में हमेशा खुद को समर्पित रखा। आजादी के बाद राजस्थान सरकार ने आपको स्वतंत्रता सेनानी होने के नाते पेंशन देने का आग्रह किया तो आपने यह कहते हुए ठुकरा दिया कि मेरे द्वारा देश सेवा में किया कार्य मेरा कर्तव्य था। मुझे इसके बदले कुछ नहीं चाहिए। सही बात भी मातृभूमि की सेवा की क्या कीमत कोई दे सकता है। एक जनम क्या हर जन्म भी अपनी मिट्टी के लिए न्यौछावर कर दें, तो कम है। सच्चे देश भक्त की यही तो पहचान होती है। दुनिया में हम आए है, तो कुछ ऐसा करके जाए की सदिया याद रखें। ईश्वरदान जी आशिया भी 29 जुलाई 1989 को अपने पीछे भरा पुरा परिवार छोड़ कर देवलोक गमन कर गए।

श्री ईश्वरदान जी के जीवन पर इतिहासकार डा. मनोज जी दाधीच ने शोध मोहनलाल सुखाड़िया विश्व विद्यालय से किया। आपके इस शोध से ये जानकारी स्वतंत्रता सेनानी श्री ईश्वरदान आशिया के बारे में साभार हमें 'माटी का लाल' कालम के लिए मिली, सो आपका कोटि कोटि धन्यवाद् और श्री सुखदेवसिंह जी आशिया जो ईश्वरदान जी के पौत्र है, ने सहयोग किया। उसके लिए आपका भी दिल से शुक्रिया।

संकलन और प्रस्तुतकर्ता
सूर्यप्रकाश दीक्षित
कवि एवं साहित्यकार
काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली

सनातन वैदिक शिक्षण संस्थान का भवन निर्माण प्राथमिक आवश्यकता

कभी 100-150 विद्यार्थी आते थे, मगर अब हर वर्ष 350 से 400 विद्यार्थी आते हैं। प्रत्येक वर्ष वैदिक शिक्षा ग्रहण करने वाले बटुक बढ़ते जा रहे हैं। बढ़ती लोकप्रियता के कारण बढ़ रहे विद्यार्थियों को छोटे भवन के अलावा अन्य मकानों में रूकवाया जाता है। गांव के प्रत्येक मकान 2-4 विद्यार्थी रूके हुए हैं। क्योंकि गांव के सरकारी स्कूल का भवन अब छोटा पड़ने लगा है। संस्थान को सरकार की ओर से सैवंत्री पंचायत के कसार गांव में ही 10 बीघा भूमि का आवंटन हो चुका है और उस जगह पर समतलीकरण का कार्य प्रगति पर है। वैदिक ज्ञान लेने वाले छात्रों में लगातार बढ़ोतरी के चलते संस्थान के लिए सुव्यवस्थित गुरुकुल भवन का निर्माण पहली प्राथमिकता बन गया है।

Let Us Help Your Business
GROW
Advertise
With
Us!
AFFORDABLE, TARGETED, NOW!
अपने बिजनेस
को दें
बुलन्दियां
सस्ती दरों पर
जयवर्द्धन
पत्रिका में
विज्ञापन
प्रकाशित कराएं।
स्पेशल ऑफर
विज्ञापन साइज
5 X 8 CM
सिर्फ
₹1000/-
सम्पर्क
शक्ति एडवरटाइजिंग
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

आज ही प्रवेश लें

गर्मी की छुट्टियों में कम्प्यूटर सीखने का सुनहरा मौका

RS-CIT

एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स

सरकारी नौकरी के लिए एक अनिवार्य योग्यता

सभी सरकारी कर्मचारियों को कोर्स करने पर
100 प्रतिशत फीस रिफंड व 675 रुपए अतिरिक्त प्रोत्साहन राशि

प्रशिक्षित फैकल्टी द्वारा प्रशिक्षण

Internet	MS Powerpoint	MS-Word	MS-Excel
ई-मेल अकाउंट खोलना	प्रजेंटेशन	बायोडेटा	बिजनेस प्लानर
ई-बुक्स पढ़ना	फोटो एलबम	निमंत्रण पत्र, प्रोजेक्ट रिपोर्ट	हफ्ते के कामो की सूची
विदेशी भाषा सीखना	सर्टिफिकेट	आई कार्ड	पॉकेटमनी प्लानिंग
टिकट बुकिंग	पोस्टर, ग्रीटिंग कार्ड	विज्ञापन/नोटिस	जमा-खर्च
यु ट्यूब पर विडियो देखना	कम्पनी प्रोफाइल	लेटर पेड/ऐनवल्प	टेक्स केलकुलेटर
फोटो का ऑनलाइन स्टोरेज	बिजनेस प्रजेंटेशन	विजिटिंग कार्ड्स	फोन डेटाबेस, डाटा विश्लेषण

राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

RKCL
IT shapes future
(Rajasthan Knowledge Corporation Limited)

New **RS-CIT**
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स

सनशाईन इंस्टीटयूट

sunshininstitute9@gmail.com

हनुमान नगर, सांयों का खेड़ा मो. 7976752935, 9950084705
ICICI बैंक के पास बस स्टेंड, केलवा मो. 7976752935, 9950084705

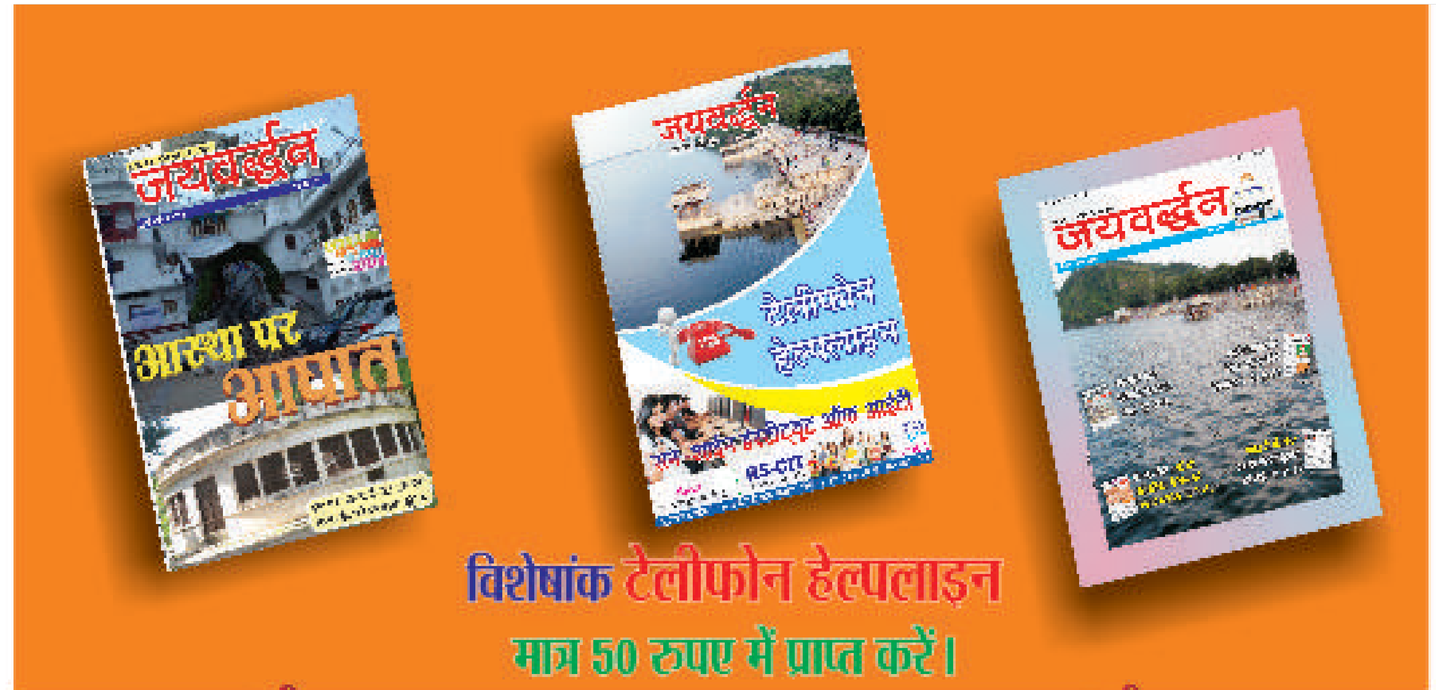

मासिक "जयवर्द्धन" पत्रिका के ग्राहक बनें और आकर्षक डिस्काउंट पाएं

नाम- श्री/श्रीमती...

पता .... राज्य ....

फोन (निवास) ....मोबाइल ....ई-मेल ....

कृपया **जयवर्द्धन** के नाम से रु ....का डी.डी या चैक नं. ....

तिथि .... प्राप्त करें।

बैंक का नाम ....

(राजसमंद जिले से बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू अधिक भेजें।)

अवधि	अंकों की संख्या	कवर मूल्य	बचत	सब्सक्रिप्शन दर
1 वर्ष	12	240	90	150 रुपए

कृपया इस फार्म को भरकर डी.डी. या चैक के साथ हमें इस पते पर भेजें,
कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद (राजस्थान) मोबाईल 9414239648, 9950084705

विशेष छूट के साथ मासिक पत्रिका की वार्षिक बुकिंग मात्र 150 रुपए में

नियम और शर्तें :

1. यह योजना केवल भारत में ही मान्य है।
2. विशेष पेशकश सीमित अवधि के लिए है।
3. राजसमन्द जिले के बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू. अधिक भेजें।
4. पत्रिका साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी तथा डाक गुम हो जाने पर जिम्मेदारी संस्थान की नहीं होगी। सूचना प्राप्त होने पर यदि अंक उपलब्ध रहता है तो पुनः निशुल्क प्रेषित कर दिया जाएगा।
5. पहले अंक को आप तक पहुंचने में एकाध सप्ताह लग सकता है।
6. कूरियर रजि.डाक से मंगवाने के लिए ग्राहक को कूरियर रजि. डाक खर्च अतिरिक्त वहन करना होगा।
7. सभी विवादों का न्याय क्षेत्र राजसमन्द न्यायालय के अधीन होगा।

जानिए प्रताप से जुड़ी रोचक बातें

अकबर ने प्रताप का सिर काटने बहलोल खां को भेजा था, मगर महाराणा प्रताप ने उसे घोड़े सहित इस तरह चीर दिया था।

महाराणा प्रताप, ये एक ऐसा नाम है, जिसके लेनेभर से मुगल सेना के पसीने छूट जाते थे। एक ऐसा राजा जो कभी किसी के आगे नहीं झुका। जिसकी वीरता की कहानी सदियों के बाद भी लोगों की जुबान पर है।

- महाराणा प्रताप को बचपन में कीका के नाम से पुकारा जाता था। इनके पिता का नाम राणा उदयसिंह था।
- प्रताप का वजन 110 किलो और हाईट 7 फीट 5 इंच थी।
- प्रताप का भाला 81 किलो का और छाती का कवच का 72 किलो था। उनका भाला, कवच, ढाल और साथ में दो तलवारों का वजन कुल मिलाकर 208 किलो था।
- प्रताप ने राजनैतिक कारणों की वजह से 11 शादियां की थी।
- महाराणा प्रताप की तलवार कवच आदि सामान उदयपुर राज घराने के संग्रहालय में सुरक्षित हैं।
- अकबर ने प्रताप को कहा था कि तुम हमारे आगे झुकते हो, तो आधा भारत आप का रहेगा, लेकिन महाराणा प्रताप ने कहा मर जाऊंगा, मगर मुगलों के आगे सर नहीं नीचा करूंगा।
- प्रताप का घोड़ा, चेतक हवा से बातें करता था। उसने हाथी के सिर पर पैर रख दिया था और घायल प्रताप को लेकर 26 फीट लंबे नाले के ऊपर से कूद गया था।
- प्रताप का सेनापति सिर कटने के बाद भी कुछ देर तक लड़ता रहा था।
- महाराणा प्रताप ने मायरा की गुफा में घास की रोटी खाकर दिन गुजारे थे।
- नेपाल का राज परिवार भी चित्तौड़ से निकला है। दोनों में भाई और खून का रिश्ता हैं।
- प्रताप के घोड़े चेतक के सिर पर हाथी का मुखौटा लगाया जाता था, ताकि दूसरी सेना के हाथी कंफ्यूज रहे।
- प्रताप निहत्थे दुश्मन के लिए भी एक तलवार रखते थे।
- अकबर ने एक बार कहा था कि अगर महाराणा प्रताप और जयमल मेड़तिया मेरे साथ होते तो हम विश्व विजेता बन जाते।
- आज हल्दीघाटी के युद्ध के 300 साल बाद भी वहां की जमीनो में तलवारे पाई जाती हैं।
- 30 सालों तक के प्रयास के बाद भी अकबर, प्रताप को बंदी न बना सका।

प्रेरणा

घर में ही झगड़ा निबटा लें

मुकदमा लड़ने से क्या फायदा आप लोग आखिर भाई भाई ही तो है। कचहरी में परेशानी के सिवा और क्या मिल सकता है ? कोर्ट कचहरी को भूल जाइए। आपस में मेल से रहे, घर में झगड़ा निबटा लें। ये शब्द एक प्रसिद्ध वकील ने ऐसे व्यक्ति से कहा था, जो उन्हें अपना मुकदमा लड़ने के लिए वकील नियुक्ति करने आया था कि हमारी ओर से वे वकालत करेंगे, तो हम अवश्य मुकदमा जीत जाएंगे। पर उसे बड़ी निराशा हुई। वह लौटा और राह में अपने साथियों से कहने लगा कि यह वकील तो बड़ा खराब निकला। धर्म का उपदेश देने लगा। कुछ साथियों ने उसकी इस बात का समर्थन किया। पर एक ने कहा नहीं, भाई इस वकील की बात ठीक है। यह सत्य कह रहा है। अन्य कोई वकील ऐसी बातें नहीं करेगा। सदा रुपए ऐंठने के फेर में रहेगा। वकील समझौता का उपदेश देगा, तो उसकी वकालत कैसे चलेगी। उसे फीस कौन देगा ? रुपए के लिए ही तो सारे वकील कोर्ट में आते हैं। यह वकील आगे चलकर महान व्यक्ति बनेगा। दूसरा बोला हां भाई, इस वकील आध्यात्मिक ज्ञान है। तभी तो रुपए ऐंठने के ढ़ंग को बुरा समझता है तथा न्याय का मार्ग बतलाता है। चलो, कचहरी न जाकर हम लोग आपस में मेल करने की कोशिश करेंगे। उपयुक्त बातें सुन 1916 ई. की है। उस समय बिहार राज्य बंगाल से अलग हो चुका था। पटना में हाईकोर्ट बन गया था। इस वकील की वकालत खूब चमकी हुई थी। उस समय उसकी उम्र 30-32 वर्ष की थी। यह वकील समय आने पर भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने। उनका नाम था डॉ. राजेन्द्र प्रसाद।

उद्धमेश प्रसाद सिंह

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय
जयवर्द्धन
website : liverajsamand.com

आपणा राचड़ा आपणो राम

पूरब री गदेड़ी अर पच्छिम री चाल चालवाऊँ नुवी श्याणपत राखवा वाला मनख आपणे रसोड़ा रा पुराणा राचड़ा ओलखे तक न्हीं। व्हे फ्राई पेन, फरीज, घर घंटी, डीनर सेट, दूद ऊनो करवा रो कंटीनर, डोसा रो तवो, आईल केन, इडलिया रो सेट, ओवन, सेण्डविच मेकर, आर.ओ. वाईपर, मिक्सर गराईण्डर, एप्पल कटर, इलेक्ट्रिक झेरनी, बाउल, डीनर- राइस प्लेटा वापरवा री आड़ोस-पड़ोस में हुंश्यारी वघारता फरे।

घरां में नल, आर.ओ लागवाऊँ इडोणी, बेवड़ा, घड़चा, खामणा घण्णा ने भूल्या तो घर घंटी, मिक्सी न गराईण्डर काम में लेवा लाग्या जदी ऊँ खड़-लोड़ी, सिल-बट्टा, घटुलियो, घट्टी, ऊंखला ने भूलवा लाग ग्या।

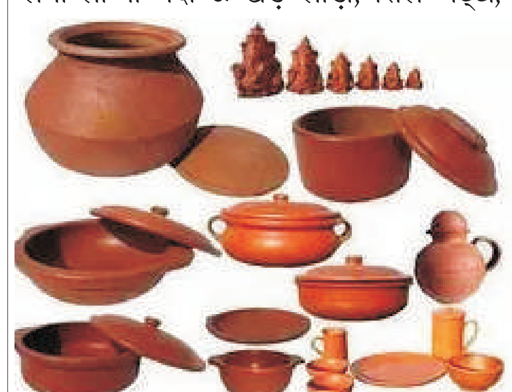

पाँच पच्ची वरां पैली घरां में रसोड़ा रे वचे हींको लटकतो हो। जणी म्हे हाणो, भाजी, फल, रसार पाणी भर्या रैवता। अबे अलमारी जतरी जग्या फरीज रूँदी रियो है। चूल्ला मेऊँ अंगीरा निकालवा में काम आती करछी, फूँक देवा री भूंगली, राबड़ी- खाटो वणावो रो पातो, हलावा रो चाटू (टीणका रो चम्मच) आटो ओसणवा री कचोटी, अर टुकड़ियो, लापी- छोका राँदवा रो भरत्यो, वघार रो घी तेल मेलवा री लोड़ा री टीपरी, दही जमावा रा दुणा न हांडिया, छा फेरवा री गोळी, रवाई, छा घालवा रे काम आवती कुलकी, हाणु वणावा री भणाई, डेगची, लकड़ी री मसाला पेटी, मक्की रा रोटा न गऊँ कड़मा रा चंदक्या (रोटी) हेकवा रे काम आवा वाली केलड़ी, पाणी पीवा हारु कुंजो, गंगाजली, रामझारो, खावा- पीवा रे काम आवती वाटकी, वाटको, तासक, गोल्यो (कटोरी) बापड़ा वाट जोई रिया है।

गैस रे चूल्ले आपणे तरै तरै रा चूल्ला ने बंद करी दीधा। छांगण, ढीरा, डछोका, डीण्डुड़ा रा कारा कीराऊँ चूल्लो चेताई न राँदो पोवो परो वैवतो। बूरा वाली हगड़ी में फोरा फोरा टीणका रा बलीता ऊँ काम वैवतो। हगड़ी म्हे कोयला भरी नी छीतड़ा रो कंकड़ो वणाई अर दीवा- हली ऊँ चेताई न नीचे बाटी अर ऊपरे खीरा पै दाल परी वणती। पम्प वालो इस्टोव, बत्तियाँ वालो नूतन अबै भूल्या भटक्या इज काम आवै।

नरेन्द्र कुमार मेहता
साहित्यकार व शिक्षाविद्
हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, नाथद्वारा
जिला राजसमंद मो. 98299-60055

जीवन में साक्षरता का महत्त्व

साक्षरता हमारे जीवन का उजाला है, जबकि निरक्षरता जीवन का अंधकार। किसी महापुरुष ने कहा है कि अशिक्षित रहने से अच्छा है। व्यक्ति का जन्म न होना। ज्ञान बिना जीवन की मुक्ति नहीं होती। ज्ञान व जीवन में प्राप्त शिक्षा ही हमें उन्नति के पथ पर ले जाती है। इंसान को अच्छे बुरे कर्मो का ज्ञान कराती है। एक शिक्षित नारी अपने परिवार के सभी सदस्यों को सुशिक्षित कर अपने ज्ञान से एक नई दिशा दे सकती है। मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि हमारा राजसमंद जिला पूर्ण साक्षरता की ओर अग्रसर हो चुका है।

वर्तमान शिक्षा पुरानी मान्यताओ, रूढ़ीवादी, अंधविश्वास से मनुष्य को मुक्त करती है। इसकी मुक्ति के बिना मनुष्य उन्नति नहीं कर सकता। आज के बच्चे कल देश के कर्णधार बनेंगे। उनके हाथों में देश की बागडोर होगी। बिना शिक्षा के वे देश को तरक्की के रास्ते पर कैसे ले जाएंगे। अज्ञानता एक ऐसी अंधेरी रात है, जिसमें न चाँद आता है न सितारे।

विद्या के समान कोई आँख नहीं है। ज्ञान का उद्देश्य शुभ होना चाहिए। हमारे विचारो में धार्मिकता का अंश आए। तभी हमारी शिक्षा पूर्ण मानी जाएगी। शिक्षा को रोजगार से जोड़ा जाए, ताकि एक व्यक्ति अपनी शिक्षा पूरी करके रोजगार हासिल करके अपने पैरो पर खड़ा होकर आजीविका कमा सके, केवल शिक्षित बेरोजगारी को बढ़ावा देना शिक्षा का उद्देश्य नहीं होना चाहिए। शिक्षा के दौरान व्यक्ति को कुछ काम धन्धे की जानकारी भी दी जाए, ताकि शिक्षा पूरी करने के बाद वह अपना छोटा मोटा धन्धा शुरू करके अपनी आजीविका कमा सके।

शिक्षितो को अपने रोजगार हेतू ऋण सुलभ कराएं जाए। गरीबी और बेरोजगारी को जड़ से खत्म किया जाए। गांवों में शिक्षा का प्रसार करके गांवों को शिक्षित बनाया जाए। तभी देश की तरक्की हो सकती है व शिक्षा का उद्देश्यपूर्ण हो सकता है।

कैलाशस्वरूप शर्मा
लेखक, कवि व शायर
जलचक्की, कांकरोली राजसमंद

नवनियुक्त शिवसेना जिला प्रमुख गुर्जर का स्वागत

राजसमंद. शिव सेना के सम्भाग प्रमुख हरीश श्रीमाली व राजसमंद के नवनियुक्त जिला प्रमुख हेमन्त गुर्जर के पहली बार नाथद्वारा आगमन पर स्वतंत्रता सेनानी लीलाधर गुर्जर द्वारा उपरना ओढ़ाकर अभिनन्दन किया गया। श्रीमाली व गुर्जर ने श्रीनाथजी मंदिर पहुंच कर राजभोग झांकी के दर्शन किए। फिर मोतीमहल में शिव सेना के संरक्षक महन्त मंगलमुखी महाराज, नाथद्वारा के गोपाल सनाढ्य, जगदीश लोधा, श्यामलाल कुमावत, शंकरलाल साहू के नेतृत्व में अर्जुन कुमावत, ललित लोहार, लक्ष्मण रेगर, गजेन्द्र वसीटा, प्रकाश प्रजापत, पंकज सनाढ्य, कुलदीप सालवी, कृष्णगोपाल बागोरा, नन्दु सनाढ्य, प्रदीप सनाढ्य, तुलसीराम कुमावत, गौरीशंकर पालीवाल, जेकी लोधा, महिला मोर्चा की करूणा परिहार, गीता ठाकर, प्रिया शर्मा, पुष्पा शर्मा आदि ने इकलाई पहनाकर श्रीनाथजी की छवि भेंट कर स्वागत किया। इस अवसर पर जिला प्रमुख गुर्जर ने सभी शिव सैनिकों से संगठित होकर कार्य करने व जनता से जुड़ी समस्याओं का समाधान कराने का आह्वान किया।

वैदिक ज्ञान की वैज्ञानिक सत्यता

हिन्दू धर्म के इतिहास पर दृष्टि डालें, तो सर्वसम्मति से और विभिन्न साक्ष्यों और प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि हिन्दू धर्म का आरंभ सिंधुघाटी की सभ्यता से जुड़ा हुआ है। सिंधुघाटी सभ्यता में मिली पशुपतिनाथ की मूर्ति, जर्मनी में 1939 में मिली नरसिंह की मूर्ति इस बात के ठोस प्रमाण है। १कुछ इतिहासकारों का मानना है कि हिन्दू धर्म का जन्म वेदों से ही हुआ है। इसलिए इसे वैदिक धर्म भी कहा जाता है। वेदों की संरचना का साथ ही मंत्रों का जन्म हुआ और हिन्दू धर्म के दार्शनिक और वैज्ञानिक पक्ष का विकास हुआ। इसी समय योग, सांख्यिकी और वेदान्त और उसके बाद पुराणों की रचना हुई, जिनमें धर्म, ज्ञान विज्ञान और इतिहास का वर्णन मिलता है।

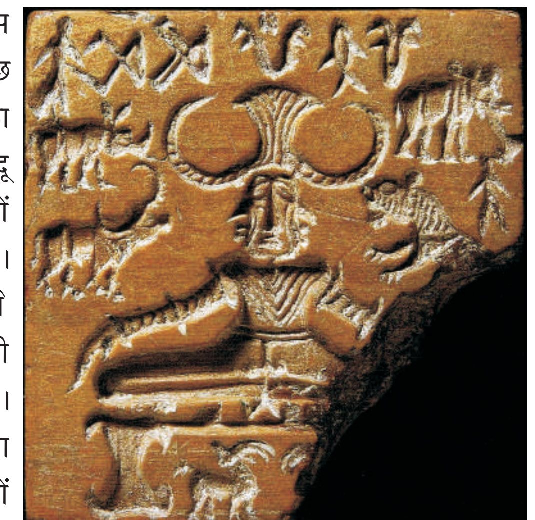

सिंधुघाटी सभ्यता में मिली पशुपतिनाथ की मूर्ति

हिन्दू धर्म और विज्ञान :

हिन्दू धर्म विज्ञान आधारित धर्म कहा जाता है। प्राचीन काल में शिक्षा का प्रचार प्रसार न होने के कारण, हिन्दू धर्म में ज्ञान विज्ञान की शिक्षा धर्म से जोड़करऔर परम्पराओं और मान्यताओं में बांधकर सिखाने का प्रयास किया गया।

कहते हैं जो वैज्ञानिक नियमों के अनुसार अपना विकास करता है, वही शाश्वत होता है। इसी कारण हिन्दू धर्म को सनातन धर्म भी कहा जाता है। इस धर्म की नींव भी वैज्ञानिकता पर ही आधारित है। इसका प्रमाण सबसे पहले मिलता है। प्राचीन काल के कार्यानुसार किए गए वर्ण विभाजन से, जहां व्यक्ति के कार्य के अनुसार उसके वर्ण को विभाजित किया गया था। सभी वर्णों में आपसी प्रेम और समन्वय था। इसके अलावा हमारे पूर्वजों ने अनेक धार्मिक परम्पराएं और मान्यताएं निर्धारित की हैं, लेकिन जब उन्हें वैज्ञानिक कसौटी पर कसा जाता है, तो वे खरी उतरती हैं। इससे यह पता चलता है कि हिन्दू धर्म पूरी तरह वैज्ञानिक है। आइये देखें किस तरह हर परंपरा और मान्यता विज्ञान की कसौटी पर खरी उतरती है।

तुलसी पूजन :

तुलसी पूजन हर भारतीय घर की पहचान है। गृहणी द्वारा सुबह सवेरे तुलसी में पानी देने की परंपरा प्राचीनकाल से चली आ रही है। तुलसी एक आयुर्वेदिक औषधि भी है और इसी कारण इसके पत्ते शरीर के हर छोटे बड़े रोग को दूर करने में कारगर सिद्ध होते हैं। यह बात वैज्ञानिक रूप से भी प्रमाणित है कि तुलसी का पौधा अपने आस पास की हवा को भी शुद्ध करता है।

सूर्य नमस्कार :

सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल चढ़ाने का प्रावधान हिन्दू धर्म में है, लेकिन इसके पीछे के वैज्ञानिक सत्य यह है कि सूर्योदय की किरणें स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभकारी होती है।

उपवास रखना :

उपवास रखने का उद्देश्य चाहे धार्मिक होता है, लेकिन इसके पीछे का वैज्ञानिक सत्य यह है कि उपवास प्रक्रिया से पाचन क्रिया संतुलित और तंदुरुस्त होती है।

पूजा की घंटी और शंख ध्वनि :

पूजा की घंटी का महत्व शायद कुछ ही लोग जानते हैं। वैज्ञानिक तथ्य है कि मंदिर या किसी भी अर्चनास्थल पर पूजा की घंटी और शंख बजाने से वातावरण कीटाणु मुक्त और पवित्र होता है। शंख की ध्वनि से मलेरिया के मच्छर भी खत्म हो जाते हैं।

गायत्री मंत्र :

गायत्री मंत्र या अन्य किसी भी मंत्र का उच्चारण जहां एक ओर पूजा को पूर्णता प्रदान करता है, वहीं मन को केन्द्रित करके शारीरिक ऊर्जा का विकास करता है।

हवन :

हवन करने का उद्देश्य किसी विशेष पूजा को करना तो होता ही है। साथ ही हवन सामग्री वातावरण को भी शुद्ध करती है। हवन सामग्री में देसी घी, कपूर, आम की लकड़ी और दूसरी सामग्री होती है, जिससे हवा में फैले कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।

गंगा :

गंगा को पावन इसलिए माना जाता है, क्योंकि इसके जल में कुछ ऐसे प्राकृतिक तत्व होते हैं, जिनके संपर्क में आने से शरीर रोगमुक्त और निर्मल हो जाता है।

पूजा करना :

पूजा करना एक धार्मिक कर्म तो है ही साथ ही यह मन की एकाग्रता को भी बढ़ाने में सहायक होता है।

पूजा के दिए जलाना :

पूजा में दिया जलाना, पूजन कर्म का अनिवार्य अंग है, लेकिन क्या आप जानते हैं कि दीया अगर घी से जलाया जाए तो हवा में घुली कार्बन-डाई- ऑक्ससाइड नष्ट हो जाती है और तेल के दीये से भी हानिकारक कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।

पीपल की पूजा :

यूं तो शनिवार के दिन पीपल के पेड़ के नीचे तेल का दीया जलाने का प्रावधान शनिदेव की पूजन अर्चना के रूप में माना जाता है, लेकिन असल में पीपल का पेड़ प्रचुर मात्रा में ऑक्सीजन देता है।

तिलक लगाना

किसी भी पूजा कर्म का आरंभ माथे पर तिलक लगाने से होता है, लेकिन इस तिलक का दूसरा पहलू यह है कि हमारी दोनों आंखों के बीच में एक नर्व पॉइंट होता है, जहां तिलक लगाकर हाथ के हलके दबाव से उसका संचार बढ़ाया जाता है। इससे एकाग्रता की शक्ति बढ़ती है और साथ ही मस्तिष्क में रक्त की आपूर्ति को भी यह नियंत्रण में रखता है।

मंत्रोच्चारण :

एक और जहां पूजा मंत्रोच्चारण के बिना संपन्न नहीं होती, वहीं दूसरी ओर मंत्र हमारे मस्तिष्क को शांत करते हैं और ब्लड प्रेशर को भी नियंत्रण में रखते हैं।

हल्दी :

हल्दी के साथ ही विवाह कर्म की शुरुआत होती है और हर पूजा में हल्दी की गांठ होना अनिवार्य है, लेकिन यह एक सर्वविदित तथ्य है कि हल्दी एक अच्छी एंटी बायोटिक है और कैंसर जैसे रोगों का उपचार करने की भी शक्ति रखती है।

जनेऊ :

जनेऊ रखना केवल पांडित्य की ही निशानी नहीं है, बल्कि यह एक बेहतरीन एक्यूप्रेशर का काम भी करता है।

दाह संस्कार :

दाह संस्कार हिन्दू धर्म का सबसे अंतिम कर्म है। वैज्ञानिक सत्य यह है कि शवदाह से प्रदूषण नहीं फैलता है।

शिखा रखना :

शिखा रखने से न केवल धर्म की पहचान होती है, बल्कि आयुर्वेद के अनुसार सिर के इस भाग में संवेदनशील कोशिकाओं का समूह होता है, जिसकी रक्षा शिखा के द्वारा की जाती है।

गोमूत्र व गाय का गोबर :

गाय का हर अंग स्वास्थ्य और वातावरण के लिए उपयोगी होता है। इसी कारण इसे मां का दर्जा दिया गया है। गाय का मूत्र जहां कई औषधियों के निर्माण में काम आता है, वहीं गोबर के लेप से विषैले कीटाणु नष्ट होते हैं।

योग व प्राणायाम :

आज योग को न केवल भारत में बल्कि सम्पूर्ण विश्व में मान्यता मिल गई। योग शरीर को बाहर और अंदर से स्वस्थ रखने में सहायक होता है।

इन्हीं सब विशेषताओं के कारण हिन्दू धर्म को संसार का सबसे तर्कसंगत और वैज्ञानिक धर्म माना जाता है।

मनमोहक है महाराणा प्रताप संग्रहालय

मेवाड़ के शौर्य और पराक्रम की गाथा इतिहास में वर्णित है। ऐतिहासिक दृष्टि से राजसमंद जिले के कुंभलगढ़ व हल्दीघाटी का बड़ा महत्त्व है, मगर पर्यटन की दृष्टि से उपेक्षित रहे जिले में महाराणा प्रताप संग्रहालय दूर दूर पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। वीर प्रसूता मेवाड़ भूमि की हल्दीघाटी में जन्मे, पले- बढ़े मोहन श्रीमाली द्वारा स्थापित महाराणा प्रताप संग्रहालय और आस पास का संकुल आज राष्ट्र का गौरव बन गया है। जो सरकार को करना चाहिए था, जिसे इन्होंने कर दिखाया। सरकारी उपेक्षा से बचा कर हल्दीघाटी व महाराणा प्रताप की स्मृति को जीवंत बनाए रखने का सराहनीय कार्य इन्होंने किया।

यह देश का प्रथम निजी संग्रहालय का है, जो बिना किसी बाहरी सहायता के एकाकी बलबूते पर निर्मित हुआ है। 15 हजार वर्ग मीटर में फैला संग्रहालय चेतक मगरी के पश्चिम एक ऊंची पहाड़ी पर खमनोर व बलीचा गांव के बीच में स्थित है। प्रात: स्मरणीय महाराणा प्रताप के जीवन से जुड़े प्रसंगों को फाइबर मॉडल के द्वारा प्रदर्शित किया गया है। विविध ऐतिहासिक घटनाएं, पन्नाधाय, शेर से युद्ध, चेतक घोड़ा, घास की रोटी खाते महाराणा प्रताप, गुफा में रणनीति रचना, गाड़िया लौहारों की प्रतिज्ञा आदि कहानियों के मॉडल दर्शकों के मन में अचरज पैदा कर देते हैं। सभी मॉडल फाइबर व अत्याधुनिक उपकरणों से निर्मित है।

विद्युत चालित अत्यंत सजीव व मनमोहक है और पार्श्व से निकलता संगीत ध्वनि व प्रकाश शॉ का संयोजन काफी मनोहारी लगता है, जो पर्यटकों को हल्दीघाटी में पुन: बार बार आने के लिए प्रेरित करता है। महाराणा प्रताप के जीवन से जुड़ी एक लघु फिल्म भी संग्रहालय में दिखाई जाती है, जिसे देख कर कई पर्यटकों की एक बारगी आंखें नम हो जाती है।

श्रीमाली की देशभक्ति के चलते हल्दीघाटी में महाराणा प्रताप के जीवन से जुड़े नित नए व दुर्लभ प्रसंगों को संग्रहालय में जोड़ा जा रहा है। यही वजह है कि हल्दीघाटी में दिनोंदिन पर्यटकों की तादाद बढ़ती जा रही है।

लक्ष्मी टिम्बर मार्ट

केसरसिंह दसाणा 9610021624
मीठालाल बोलीवाल 7665410815

ईमारती लकड़ी, सागवान, साल, लाली, कपूर, पाइन,
प्लाईवुड, दरवाजा-फ्लस डोर, सनमाईक इत्यादि के होलसेल के विक्रेता

सोमको टायर के पास, लक्ष्मी कॉलोनी, 100 फीट रोड, जिला-राजसमंद

राजसमंद शहर के मध्य शान्त वातावरण युक्त सेन्टर

सरकार मान्यता प्राप्त ज्ञान केन्द्र

LOHIYA
COMPUTER CENTER

Tally
POWER OF SIMPLICITY

आज ही प्रवेश लें

गर्मी की छुट्टियों में कम्प्यूटर सीखने का सुनहरा मौका

RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स

सरकारी नौकरी के लिए एक अनिवार्य योग्यता

सभी सरकारी कर्मचारियों को कोर्स करने पर
100 प्रतिशत फीस रिफंड व 675 रुपए अतिरिक्त प्रोत्साहन राशि

शारदा होटल बिल्डिंग, छतरियों के पीछे, हस्तीनापुर, कांकरोली, राजसमंद
मोबाइल : 98875-25095, 94148-25095

!! हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं !!

शिवसेना

राजसमंद के लोकप्रिय

श्री हेमन्त गुर्जर

के शिवसेना के राजसमन्द

जिला प्रमुख

बनने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

-: शुभेच्छु :-

श्री हरिश श्रीमाली -सम्भाग प्रमुख उदयपूर, महन्त श्री मंगलमुखी महाराज, राजसमंद, श्री तुलसीराम कुमावत, श्री जयन्त पालीवाल, श्री मनीष पालीवाल, श्री जगदीश कीर, श्री हिम्मतकीर, श्री नरेश पालीवात, श्री भेरूलाल कुमावत, श्री गौतम स्वर्णकार, श्री गोपाल सनाढ्य, श्री जगदीश लोधा, श्री श्यामलाल कुमावत, श्री शंकरलाल साहु, श्री अर्जुन कुमावत नाथद्वारा, श्री ललित लौहार, श्री लक्ष्मण रेगर, श्री गजेन्द्र वसीटा, श्री प्रकाश प्रजापत, महिला मोर्चा करूणा परिहार उदयपुर, किशोर सालवी, श्री विजेश सोनारिया, श्री गोपाल सोनारिया आमेट, किशनासिह चौहान, श्री भूरसिहं, श्री जीवन सिंह चारभुजा

जयवर्द्धन की वार्षिक बुकिंग सिर्फ 150 रुपए में

उदयपुर, जयपुर, जोधपुर क्यों आपके शहर में सर्वश्रेष्ठ मंच | राजसमन्द में पहली बार सर्वश्रेष्ठ फैकल्टी एक ही मंच पर

संकल्प कोचिंग क्लासेज

रेनबो कलर लेब, छतरियों के पास, कांकरोली

:: संकल्प टीम ::

रिजनिंग - राकेश चौधरी, जितेन्द्र मीणा सर, जयपुर
शिक्षा मनोविज्ञान - सुरेन्द्र सांगवान सर, D.K. सिंघल
राजनीति विज्ञान - ओ.पी. सर, (संरक्षक), सुमेर सर
मैथ- जितेन्द्रजी, जयनारायणजी, संस्कृत - राजौरियाजी
हिन्दी - महेन्द्रजी झांझड़िया, श्रीमाली सर, उदयपुर
राजस्थान की कहानी - एस.एस. बैंसला की जुबानी
इतिहास- दीपकजी करोल, प्रदीप सर
साइंस - राजेन्द्रजी सोढ़ा सर, (गंगानगर)
अंग्रेजी - नन्दवानाजी, रेखाजी चावला
भूगोल - राजेन्द्र राठौड़ सर उदयपुर, अनिल दुल्लड़ सर

रतन सर-निदेशक

सभी प्रकार के कॉम्पिटीशन की तैयारी करवाई जाती हैं।

संरक्षक - O.P. सर मो. 9929728005, 8769820124, 9116987112

ऐसी दिखेगी मिराज ग्रुप द्वारा बनाई जा रही 351 फीट की शिव प्रतिमा

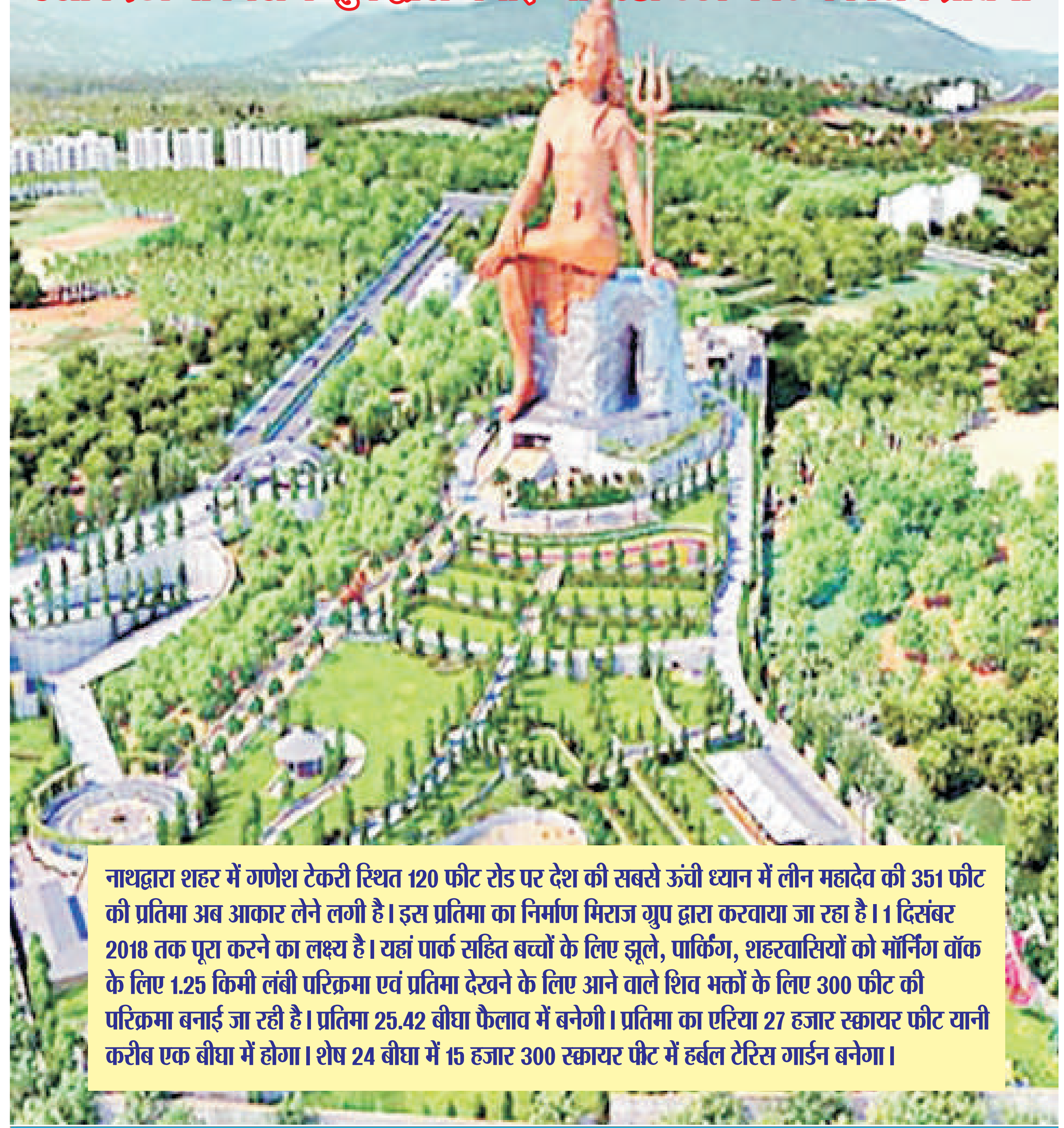

नाथद्वारा शहर में गणेश टेकरी स्थित 120 फीट रोड पर देश की सबसे ऊंची ध्यान में लीन महादेव की 351 फीट की प्रतिमा अब आकार लेने लगी है। इस प्रतिमा का निर्माण मिराज ग्रुप द्वारा करवाया जा रहा है। 1 दिसंबर 2018 तक पूरा करने का लक्ष्य है। यहां पार्क सहित बच्चों के लिए झूले, पार्किंग, शहरवासियों को मॉर्निंग वॉक के लिए 1.25 किमी लंबी परिक्रमा एवं प्रतिमा देखने के लिए आने वाले शिव भक्तों के लिए 300 फीट की परिक्रमा बनाई जा रही है। प्रतिमा 25.42 बीघा फैलाव में बनेगी। प्रतिमा का एरिया 27 हजार स्क्वायर फीट यानी करीब एक बीघा में होगा। शेष 24 बीघा में 15 हजार 300 स्क्वायर फीट में हर्बल टेरिस गार्डन बनेगा।

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : C/O **शक्ति स्पोर्ट्स,** शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद, 9414239648, 96729 94705
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

To